कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः06 मार्च 2013

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य

डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0ः 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

राष्ट्र स्तरीय १०वां साहित्य मेला सम्पन्न.............. 06

काश! हमने चीन के बारे में 'सरदार पटेल' की बात सुनी होती
समाज प्रवाह, मुंबई.................14

क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों?............................ 16
–डॉ० इक़बाल अहमद मंसूरी शास्त्री

स्वतंत्र भारत के राजनैतिक पटल पर महाराणा प्रताप की भांति सिद्धांतों पर अडिग प्रो.बलराज मधोक 17
–पूनम राजपुरोहित 'मानवताधर्मी'

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04

अपनी बातः आखिर हम कब सुधरेंगें 05

होली पर विशेषः
हितेश कुमार शर्मा, श्री कृष्ण अग्रवाल, संतोष कुमार साहू, सुधीर गुप्ता 'चक्र' 20–21

ए मेरे वतन के लोगों 15

कविताएंः
श्रीमती पुष्पा शैली, डॉ० दिनेश त्रिपाठी 'शम्स', देवदत्त शर्मा 'दाधीच' डॉ० ब्रजेश सिंह 22–23

कहानीः पानी ने बेपानी किया-डॉ. तारा सिंह 26

आध्यात्मः मृत्यु की ओर 28
–डॉ० अरुण कुमार आनंद

आपकी डाक 30

स्वास्थ्य 31

साहित्य समाचार- 24, 32

लघु कथाएं 33

समीक्षा 34

प्रेरक प्रसंग

बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

रामचरित मानस 2/7

इस चौपाई को आध्यात्मिक रूप से नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से समझना परमावश्यक है. संसार में जितने भी प्राणी है उन सबमें जीवन यापन की यथा आहार, निद्रा, भय समान रूप से पाये जाते है। परन्तु विवेक केवल मनुष्य में मिलता है. प्रश्न यह है कि यह विवेक कहां से प्राप्त हो. मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी माता, पिता, बन्धु, गुरू इत्यादि सब लोग उसको जीवन यापन की विधायें समझाते है और यह समस्त मनुष्यों में समान रूप से परिलक्षित होता है परन्तु विवेक सत्संग के बिना प्राप्त नहीं होता. सत्संग केवल आध्यात्म का विषय नहीं है वह मनुष्य को हर पग पर प्रयोग करना पड़ता है. अगर आपमें विवेक नहीं होगा तो आप राह चलते गड्ढे में गिर सकते हैं परन्तु यहां पर विवेक का अर्थ बहुत गूढ़ है. संसार को सही मार्ग पर चलने की शिक्षा देना और उसके अनुसार विवेक का प्रयोग करना बहुत आवश्यक होता है. विवेक से जुड़ा एक शब्द है विचार. विचार अर्थात विश्व की चाहना से रहित. यह सोच जब मनुष्य के अन्दर आ जाती है तब वो सही मायने में विवेक का प्रयोग कर पाता है. संसार की तमाम विधाएं बगैर विवेक के प्रयोग के गलत परिणाम देती है.

रामकृष्ण गर्ग—इलाहाबाद, मो0: 9450608746

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम इह विधते

जीवन में ज्ञान के बिना काम चलना असंभव है. यह प्रगति का मूलमंत्र है. सही ज्ञान के बिना कर्म संभव नहीं है.

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्

कर्म करने से ही सफलता प्राप्त होती है. हर कर्म का फल अवष्य मिलता है. सोच समझ कर कर्म किया जाना चाहिए. मन की एकाग्रता से कर्म में गुणवत्ता आती है. मन के भटकाव कार्य परिणाम में सफलता नहीं देते. कार्य करने पर ही व्यक्ति का पूरा अधिकार है. उसके फल पर नही.

योगः कर्मसु कौशलम्

योग का आशय है जुड़ाव. व्यक्ति जब मन लगाकर किसी काम को करता है तो निपुणता से काम हो सकता है और निपुणता से काम करने पर ही कर्म फलदायी होता है.

आलस्य हि मनुश्यानां शरीरस्थे महानरिपुः
आत्मैव आत्मनः बंधुः' आत्मैव रिपु अत्मनः

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य है. व्यक्ति अपना मित्र स्वतः है और अपना शत्रु भी खुद ही है. अपने कर्मो से ही मनुष्य अपना भाग्य बनाता या बिगाड़ता है. जो जैसी करनी करें सो वैसा फल पाये. अपने कर्मो से ही व्यक्ति पूजा जाता है या पीटा जाता है.

-प्रो० सी०बी०श्रीवास्तव 'विद्ग्ध'
जबलपुर, म.प्र.

आदाब अर्ज़ है

०१

चुनाव से पूर्व
मेरे देश का नेता
'ठोस' होता है
चुनाव के दौरान
मतदाताओं के सामने
'द्रव' बन कर
आंसू बहाता है/और
चुनाव जीतने के बाद
'गैस' बन कर
गायब हो जाता है.

०२

नगर के प्रत्येक चौराहे पर
मिस्त्रियों के दल
लगा रहे थे नल।
तभी अचानक नेता राम
निवास
आये उनके पास
और बोले 'बस'
अब और नल नहीं गाड़ने है/बल्कि
लगे हुए भी उखाड़ने हैं।
अब
इन परोपकारों का
समय बीत गया
क्योंकि
मैं चुनाव जीत गया।

-हुक्का बिजनौरी, बिजनौर, उ.प्र

कांटों की सेज

मेवा है, बोतल है, सोफा है और बड़ी सी मेज है/ शयन हेतु सुन्दरी है व गद्देदार सेज है/वे फिर भी कह रहे हैं/कि मंत्रीपद कांटों की सेज है।

मिलावट

समाज सेवियों का कहना है/कि ऊंच-नीच को छोड़ मिलजुल कर रहना है/कोई करे न करे हम करके दिखा रहे हैं/सुगन्धित धनियें में गधे की लीद मिला रहे हैं/कई हानिप्रद तत्वों को मिलाकर सिन्थेटिक दूध/बना रहे हैं यही नहीं मिलावट के बाद भी हम/कम तोल रहे हैं/फिर भी उनसे तो अच्छे हैं/जो समाज में बैमनस्यता का विष घोल रहे हैं. **-देवेन्द्र दीक्षित 'शूल',**
हाथरस, उ.प्र.

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

आखिर हम कब सुधरेंगे?

८ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है. प्रत्येक वर्ष इस दिन महिला संगठनों द्वारा जो मांगे उठाई जाती है उनके सार में 'पुरुष महिलाओं को उपभोग की वस्तु न समझे. पुरुषों को यह मानना चाहिए कि महिलाएं भी उनकी ही तरह है. महिलाएं पुरुषों से अधिक सक्षम होती है. महिलाओं के साथ भेद-भाव नहीं करना चाहिए. पुरुषों को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए आदि'. तमाम बातें, चर्चाएं, परिचर्चाएं, घोषणाएं होती है. फिर अगले दिन से वही ढाक के तीन पात.

इस संदर्भ में मेरा यह कहना है कि महिलाओं को केवल पुरुषों के ऊपर दोष मढ़कर अपने को सही साबित करने को अपनी बेचारी कहलाने की प्रवृत्ति का त्याग करना होगा. उन्हें स्वयं अपने अंदर कुछ बदलाव करने की जरुरत है.

पहला दूसरी महिलाओं के बारे में राय बनाने की उत्कट इच्छा. सामान्यतः महिलाएं अपने आप के लिए कई मापदंड रखती है, लेकिन दूसरी महिलाओं के मामलों में उनका नजरिया और भी कड़ा होता है. अगर पड़ोसी का कोई बच्चा थोड़ी देर रोता है तो कहेंगी कैसी ग़ैर जिम्मेदार मां है जो अपने बच्चे को नहीं देख रही है? शार्ट स्कर्ट पहनें किसी लड़की को देखते ही महिलाओं उसके चरित्र के बारे में तमाम शंकाए पैदा होने लगती है. किसी खूबसूरत महिला को अपने विभाग में प्रमोशन मिल जाए तो वे सोचती है कि पता नहीं क्या-क्या किया होगा जबकि वे खुद ही परिपूर्ण नहीं है. अधिकांशतः एक महिला के द्वारा ही गर्भ में पल रही औलाद का लिंग परीक्षण कराया जाता है, भ्रूण हत्या कराने का प्रयास कराया जाता है? अधिकांशतः दहेज की बलि वेदी पर एक महिला के द्वारा ही एक महिला को चढ़ाया जाता है. आखिर क्यों? एक महिला को दूसरी महिला के प्रति ऐसा नजरिया रखने का क्या औचित्य है? दूसरी महिलाओं को खुलकर सांस लेने का मौका तो दीजिए.

दूसरा, महिलाओं को अपने बनावटी व्यवहार को खत्म करने की जरुरत है. वे पुरुषों के चुटकुलों पर हंसती है जबकि वे जानती है कि इसमें हंसने जैसी कोई बात नहीं है. किसी पुरुष को श्रेष्ठ होने का अनुभव कराने के लिए खुद मूर्ख बनने का नाटक करती है. इस तरह के दिखावों की क्या जरुरत है? सामूहिक रूप से पुरुषों के साथ समानता की मांग का क्या मतलब है जब आप व्यक्तिगत स्तर पर पुरुषों को खुश रखने के लिए खुद को नासमझ दिखाने को तैयार रहती है.

तीसरा, महिलाओं को महत्वाकांक्षी बनने तथा बड़े सपने देखने की आदत डालनी चाहिए. कई भारतीय महिलाओं की उपलब्धियां पुरुषों से भी बेहतर है. उन्हें अपनी प्रेरणा मानकर अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाएं. आपकी कामयाबी ही पुरुषों को महिलाओं की इज्जत करने के लिए बाध्य करेगी.

चौथा, अच्छी मां, पत्नी, बहन, बेटी, दोस्त और प्रेमिका बनना बेहद जरूरी है, लेकिन इसमें ज्यादा न उलझें. अपने आपके साथ संबंध को समझें. जब नारी अपनी अहमियत जताएगी, तभी लोग उसे गंभीरता से लेंगे.

इससे अधिक कमियां एक साथ गिनाने लगा तो शायद यह तमका महिला संगठनों के द्वारा मेरे ऊपर जड़ दिया जाए कि पुरुष होने के कारण मैं महिलाओं को हीन दर्शानें की कोशिश कर रहा हूं और महिला संगठनों द्वारा मुझे महिला विरोधी करार करने का प्रयास किया जाने लगेगा.

हमारी (पुरुष/महिला) यह मनोवृत्ति बन गई है कि हम अपनी कमियों को छूपाने के लिए अपना सारा दोष दूसरों के ऊपर (पुरुष/महिला/सरकार/पुलिस/प्रशासन) मढ़ कर अपने को पाक साफ करने की असफल कोशिश करते हैं. हमारी यह महिला संगठनों से गुजारिश है कि यदि वह आगामी महिला दिवस पर महिलाओं को उनकी कमियां सुधारने को लेकर परिचर्चा करें, नसीहत दें तो इसकी सार्थकता अधिक होगी वरना....

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

१०वां साहित्य मेला एक व्योरा

राष्ट्र स्तरीय १०वां साहित्य मेला सम्पन्न

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आचार्य रामजी व्यास, श्री राजकिशोर भारती व ईश्वर शरण शुक्ल

आचार्य रामजी व्यास को माल्यार्पण करते हुए गोकुलेश्वर द्विवेदी

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद व मीडिया फोरम ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य मेला हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद में आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृष्ण कुमार यादव, निदेशक-डाक सेवाएं, इलाहाबाद, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अजामिल व्यास, समाचार संपादक-सीटीटीवी तथा श्री राजकिशोर भारती संरक्षक-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान रहे. कार्यक्रम की अध्यक्षता वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी ११३ वर्षीय आचार्य रामजी व्यास, जयपुर, राजस्थान ने कीं.

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री कृष्ण कुमार यादव द्वारा सरस्वती जी के चित्र पर माल्यार्पण व द्वीप प्रज्जवलन से हुआ. मंचासीन अतिथियों को माल्यार्पण क्रमशः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, ईश्वर शरण शुक्ल, आर.मुत्थुस्वामी ने किया. अतिथियों का स्वागत मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया के महासचिव महेन्द्र कुमार अग्रवाल ने किया. प्रथम सत्र का आरम्भ बाल काव्य प्रतियोगिता से हुआ. जिसमें विभिन्न विद्यालयों के करीब ५० बच्चों ने भाग लिया. जिसमें कुमारी संस्कृति द्विवेदी प्रथम, कौस्तुभश्री तिवारी को द्वितीय और अमन कुमार यादव को तृतीय स्थान मिला.

बाल काव्य प्रतियोगिता के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ११३ वर्षीय आचार्य रामजी व्यास ने संस्थान के सचिव डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का अभिनंदन किया और संस्थान के लिए इक्कावन हजार रुपये का चेक प्रदान किया तथा भविष्य में भी सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया.

बाल काव्य प्रतियोगिता में काव्य पाठ करते हुए विभिन्न विद्यालयों के १५ वर्ष से कम उम्र के बच्चे

श्री राजकिशोर भारती को माल्यार्पण करते हुए हिन्दी सांसद आर.मुत्थुस्वामी

विशिष्टि अतिथि श्री अजामिल व्यास जी को माल्यार्पण करते हुए ईश्वर शरण शुक्ल

प्रगति आख्या का वाचन करते हुए संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य राम जी व्यास

बाल काव्य प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को नगद राशि प्रदान करते हुए संस्थान के कार्यसमिति सदस्य महेन्द्र कुमार अग्रवाल

पर्यावरण संरक्षण में साहित्यकारों की भूमिका

तदोपरान्त 'पर्यावरण संरक्षण में साहित्यकारों की भूमिका' विषयक आलेख वाचन व खुली चर्चा हुई. **रामआसरे गोयल**-सिम्भावली, उ.प्र ने कहा 'समकालीन साहित्यकार अपनी छटपटाहट को रोक नहीं सकता. अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण, जन चेतना उत्पन्न कर अपनी भूमिका निभा रहा है.'

श्रीमती सुरेखा शर्मा, गुड़गाव, हरियाणा ने कहा 'साहित्यकार का दायित्व है कि वह अपने पाठकों को बोध कराए कि कैसे पर्यावरण में हम जी रहे हैं. इस दिशा में जन जागृति आवश्यक है. हमारे साहित्यकारों व चिंतको के साथ पर्यावरण संरक्षक भी सहयोग करें. साहित्यकार को जागरूक प्रहरी की भांति पर्यावरण संरक्षण हेतु उद्यत रहना होगा.'

आर.मुत्थुस्वामी , दुर्ग, छ.ग. ने कहा कि 'पर्यावरण सरक्षण में लेखक क्रांति ला सकते हैं. जनता को रचनाओं के माध्यम से जागरुक कर युग बदला जा सकता है.'

संतोष शर्मा 'शान', हाथरस, उ. प्र. ने कहा कि 'पीपल, नीम, पूज्यनीय वृक्षारोपण हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए. साहित्यकार इसमें अहम भूमिका निभा सकते है.'

हेमा उनियाल, नई दिल्ली ने कहा कि धरती के श्रृंगार का वर्णन साहित्य में सदियों से होता आ रहा है. हर दृष्टि से साहित्यकारों ने पर्यावरण को समृद्ध किया है.'

रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें रामायण से प्रेरणा लेनी चाहिए. तुलसीदास जी ने इसे बड़े सलीखे से बयां किया है.'

खुली चर्चा में विमला मिश्रा, राहुल कुमार, सौरभ गुप्ता, सृष्टि कुशवाहा, इंदर सिंह जैन, रामदरश विश्वासी ने अपने विचार रक्खें.

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र में संस्थान की प्रगति रिर्पोट संस्थान के संयुक्त सचिव ईश्वर शरण शुक्ल ने पढ़ी, हिन्दी मासिक विश्व स्नेह समाज के निराला जी को समर्पित इलाहाबाद के साहित्यकार विशेषांक का विमोचन सहित आचार्य यदुमणि कुम्हार की पुस्तक जयश्रीराम व लघुकथा संग्रह 'वंदे मातरम', ओमप्रकाश त्रिपाठी के काव्य संग्रह 'प्रयास' तथा सहयोगी संकलन ये आग कब बुझेगी-भाग-३ का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया. तदोपरान्त आचार्य रामजी व्यास का अभिनंदन, श्रीमती हेमा उनियाल, नई दिल्ली को उनकी शोध परक पुस्तक 'केदार खण्ड' के लिए विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि से समलंकृत किया गया.

मुख्य अतिथि श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा 'यह संस्थान विगत कई वर्षो से हिन्दी साहित्य व समाज सेवा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है. मैं संस्थान की गतिविधियों से कई वर्षो से भली भांति अवगत हूं. इस कार्य के लिए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का विशेष आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस भव्य आयोजन में आमंत्रित कर कई राज्यों से पधारे साहित्यकारों से परिचित होने, जानने-समझने का मौका दिया. संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' अपने नाम के अनुरुप समाज को एक नई दिशा दे रही है.'

विशिष्ट अतिथि श्री अजामिल व्यास जी ने कहा 'इलाहाबाद कभी साहित्य का गढ़ था. जो धीरे-धीरे जाता रहा. लेकिन विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, ने अपने कार्यो से, देश के कोने-कोने से साहित्यकारों को एकत्र कर इसकी गरिमा को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य किया है. संस्थान ने इस पावन धरती की गरिमा को उच्चकृत करने में महत्ती भूमिका अदा की है. मैं संस्थान की पूरी टीम इस कार्य के लिए बधाई देता हूं तथा भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी ऊर्जा को बनाए रक्खें.'

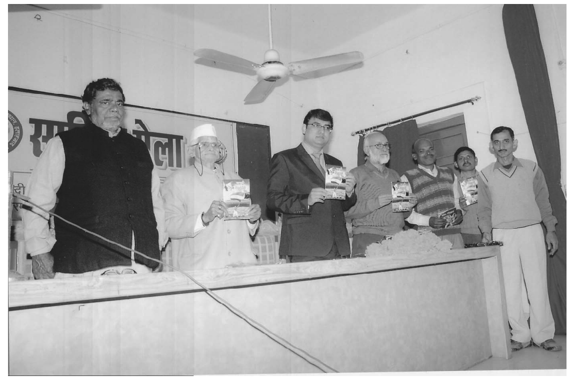

आचार्य यदुमणि कुम्हार की पुस्तक का विमोचन करते हुए अतिथिगण

ओम प्रकाश त्रिपाठी की पुस्तक का विमोचन करते हुए अतिथिगण

आचार्य रामजी व्यास का अभिनंदन करते हुए राजकिशोर भारती, कृष्ण कुमार यादव

आचार्य रामजी व्यास का अभिनंदन करते महेन्द्र कुमार अग्रवाल

संस्थान के संरक्षक श्री राजकिशोर भारती ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्थान ने अपने अल्प समय में ही अपने आयोजनों, सामाजिक कार्यो,

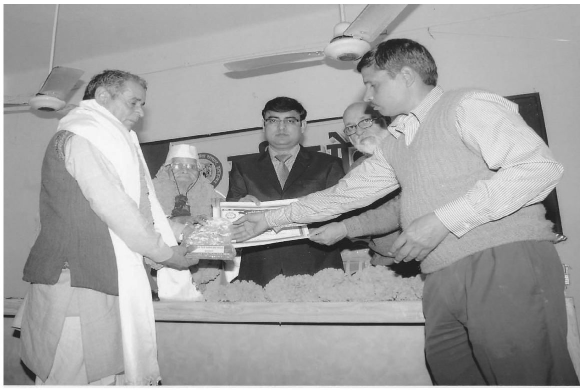

रामदरश विश्वासी को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

रामकृष्ण गर्ग को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

मुखराम माकड़ ‘माहिर को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

किसान दीवान को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

आर.मुत्थुस्वामी को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

मिथिलेश जैन को को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

प्रकाशनों के माध्यम से पूरे देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी अपनी पहचान बना चुका है. संस्थान के सम्मान का अपना गौरव है.

श्री मुखराम माकड़ ‘माहिर- रावतसर, राजस्थान, श्रीमती मिथिलेश जैन-आगरा, उ.प्र., श्री रामआसरे गोयल-सिम्भावली, उ.प्र., श्रीमती सुरेखा शर्मा-गुड़गांव, हरियाणा, श्री आर.मुत्थुस्वामी-दुर्ग, छत्तीसगढ, आचार्य यदुमणि कुम्हार-पं.सिहभूमि, झारखंड, डॉ. वारिस अंसारी-फतेहपुर, उ.प्र. को विहिसास अलंकरण, सुकीर्ति भटनागर-पटियाला, पंजाब को हिन्दी सेवी सम्मान, किसान दीवान-छत्तीसगढ़ को समाजश्री, रामदरश विश्वासी-अम्बेडकरनगर, उ.प्र. को कैलाश गौतम सम्मान, रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद को भ्रष्टाचार निवारण में साहित्यकारों की भूमिका विषयक सर्वोत्कृष्ठ लेख-२०१२ के लिए, संस्थान द्वारा प्रकाशित सहयोगी संकलन

यदुमणि कुम्हार को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

सुकीर्ति भटनागर को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

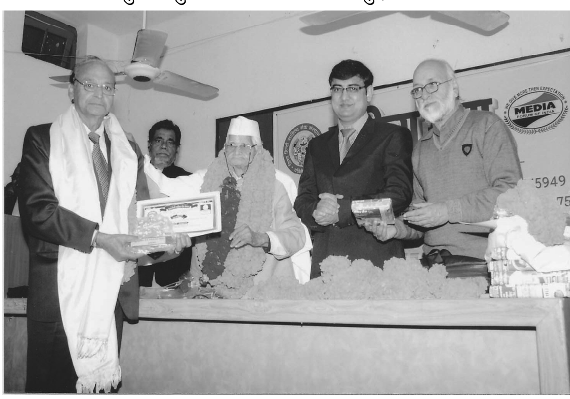

श्री रामआसरे गोयल को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

श्रीमती संतोष शर्मा 'शान' को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

सुरेखा शर्मा को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

श्री वारिस अंसारी को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

ये आग कब बुझेगी भाग-३ के लिए सर्वोत्कृष्ट लेखक सम्मान संतोष शर्मा 'शान' हाथरस, उ.प्र. को, हिन्दी विषय में १०वीं, १२वीं, स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक अर्जित करने पर दिया जाने वाला हिन्दी उदय सम्मान, चित्राशी श्रीवास्तव पुत्री श्री राकेश श्रीवास्तव-रायबरेली, उ. प्र., राहुल पुत्र श्री हरि सिंह-उज्जैन, म.प्र., राहुल पुत्र श्री शंकर लाल-उज्जैन, म.प्र., काव्यांशी, बड़गांव, कर्नाटक को प्रदान किया गया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी व पूर्व सांसद ११३ वर्षीय आचार्य रामजी व्यास ने कहा कि यह संस्था बहुत ही पुनित कार्य कर रही है. मैं इस संस्थान के पूरे परिवार को अपना आशीष देता हूं. उन्होंने शीघ्र ही संस्थान को अपने ट्रस्ट से कुछ आर्थिक मदद व संस्थान के निजी कार्यालय के लिए व्यवस्था करने का प्रयास करूंगा. उन्होंने संस्थान के सचिव को उनको कार्यो के लिए राजस्थानी टोपी, साल व माला पहनाकर उनको आशीर्वाद दिया.

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया सोसायटी द्वारा संपादको/पत्रकारों का सम्मान

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया सोसायटी द्वारा बायें से दायें प्रथम पंक्ति श्री शिवशरण त्रिपाठी-कानपुर, उ.प्र., संपादक, द मॉरल हिन्दी/अंग्रेजी साप्ताहिक को सम्मानित करते हुए श्री कृष्ण कुमार यादव, श्री अजामिल व्यास और श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल २-श्री अजामिल व्यास समाचार संपादक-सीटी टीवी, इलाहाबाद को सम्मानित करते हुए श्री कृष्ण कुमार यादव, और श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल ३-श्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह- ब्युरो प्रमुख हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान, इलाहाबाद सम्मानित करते हुए श्री सत्यप्रकाश, आचार्य रामजी व्यास, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल और ईश्वर शरण शुक्ल, ४-श्री शरद द्विवेदी वरिष्ठ पत्रकार- हिन्दी दैनिक 'दैनिक जागरण' इलाहाबाद को पत्रकार गौरव की मानद उपाधि से विभूषित करते हुए श्री कृष्ण कुमार यादव, श्री अजामिल व्यास और श्री सत्य प्रकाश

अजब है दुनिया के इंसान, नहीं करते बेटी का मान

द्वितीय सत्र में सम्मान समारोह के बाद कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं संरक्षक विश्व स्नेह समाज श्री बुद्धिसेन शर्मा ने किया.

आगरा से पधारी डॉ० सरोज गुप्ता ने कहा-**आने को आतुर गुलाब हैं सजालों स्वागत द्वार।/फूल खिले हैं सदा खिलेंगे आयेगी पुनः बहार।।**

डॉ. वारिस अन्सारी, फतेहपुर ने कहा **धार्मिक अपवाद बोए जा रहे हैं/लोग आतंकवाद बोए जा रहे है/होलिकाओं को जलाया जा रहा है/आग में प्रहलाद बोए जा रहे हैं।**

किसान दीवान, महासमुन्द्र, छ.ग. ने कहा-**बेरुखी बेबशी, इधर कहां से आ रहे/मानवीय मूल्य को कुतर कुतर के खा रहे।**

मिथिलेश जैन, आगरा, उ.प्र. **बेटों की चाहत में, मां मेरी बली न दो/जन्म देकर मुझको, बगिया में खिलने दो**

पीयूश मिश्र रायबरेली ने कहा-**जितना आगे वतन हुआ है/उतना नैतिक पतन हुआ है।/शायद लाशें नग्न जलेंगी,/महंगा इतना कफन**

कवि सम्मेलन का संचालन करती हुई हिन्दी सांसद श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'

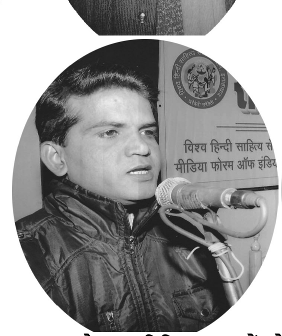

काव्य पाठ करते हुए विभिन्न स्थानों से कवि गण

काव्य पाठ करती हुई हेमा उनियाल व मंचासीन आचार्य रामजी व्यास व श्री बुद्धिसेन शर्मा

हुआ है।।

हेमा उनियाल, नई दिल्ली ने कहा
प्रकृति की सुन्दर लालिमा/संवर्द्धन करती नव चेतन का/खग मृग के सुन्दर कलख से/विस्मृत होता धुन्ध तिमिर को

रामआसरे गोयल, सिम्भावली, उ.प्र ने कहा-**मैं तुम्हारी आरती का दीप बनता जा रहा हूं/मैं तुम्हारे पुराण ग्रन्थ का पृष्ठ बनता जा रहा हूं।**

सुरेखा शर्मा, गुड़गाव, हरियाणा ने कहा
मेरे जीवन की डोरी को माता यूं मत तोड़ो/मैं भी जन्मू इस धरती पर, मुझे अपने से जोड़ो।

राहुल कुमार, सुल्तानपुर ने कहा
मानव मंदिर जीवित है, कदमों के तले दबाते है,/पत्थर मूर्ति पड़ा पुराना, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।

अंकिता साहू, इलाहाबाद ने कहा-
जाने क्यूं,/घावों का दर्द/रिस-रिस कर चोट करता/ज़ेहन में जाने क्यूं

तलब जौनपुरी, इलाहाबाद ने कहा-'
मुझे इक शख्स भी इस दौर में सच्चा नहीं मिलता/लिहाज़ा दोस्ती का फलसफ़ा अच्छा नहीं लगता 'तलब' बाक़ी बचे अरमान भी रख दो जनाज़े पर,/अधूरे मन से

रुख़सत हो हमें अच्छा नहीं लगता।

विमल वर्मा, इलाहाबाद ने

जिन पेड़ो को काट रहे हो, वो दानी शिवशंकर हैं।/विष पी कर अमृत बरसाते, इनका मत संहार करो।।

कैलाश नाथ पाण्डेय, इलाहाबाद ने कहा-**आती मादरे वतन की याद।/गिर जाती है सरहद की दीवार/रहकर भी सात समन्दनर पार,/बहुत सताती है वतन की याद/तब दिल धड़कता है यार।**

विवेक सत्याशु, इलाहाबाद ने कहा-

मां आग है मां देश है/मां सबसे बड़ा विश्वास सबसे बड़ा जादू है/हर चौराहे पर खड़ी सैनिक है मां।

अम्बरीश शुक्ल, इलाहाबाद ने कहा

कास इस रेगिस्तान में होती एक बूंद/फिर उपजता बसन्त मानव के आलिंगन में।

डॉ० रमेश कुमार 'चन्द्रा' ने कहा

अजब है दुनिया के इंसान/नहीं करते बेटी का मान/ये कैसे लोग हो गये

दयाशंकर पाण्डेय, इलाहाबाद ने कहा

सीमाओं से मुक्ति तुम्हें दे अन्तहीन
नभ दिया प्यार में।/घर के आंगन में छोटा सा मैं/आकाश लिये बैठा हूं।

इनके अतिरिक्त **डॉ. दुर्गा शरण मिश्र-इलाहाबाद, आर.मुत्थुस्वामी, दुर्ग, छ.ग.**, सृष्टि कुशवाहा, कैलाश नाथ पाण्डेय, वीनस केसरी, हुमा फात्मा, सादमा बानो, शुभ्राशु पाण्डेय, मुखराम माकड़ 'माहिर' रावतसर, राजस्थान, रामदरश विश्वासी, अम्बेडकर नगर, उ.प्र., आचार्य यदुमणि कुम्हार, पं. सिहभूमि, झारखंड, मिथिलेश जैन, आगरा, उ.प्र. आदि ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मत्र मुग्ध किया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कि मैं लगभग १५ राज्यों से पधारे साहित्यकारों बन्धुओं व मंचासिन सभी अतिथियों को विशेष आभारी हूं. आप सभी ने इस आयोजन के ८ बजे से सायं ६ बजे तक के व्यस्त कार्यक्रम में धैर्य पूर्वक अपनी बातें रक्खी और सूनी. संस्थान के सम्मानों की अपनी गरिमा है. यहां सम्मानित हुए सभी साहित्यकार जिनमें सभी को सर्वश्रेष्ठ तो नहीं कह सकता लेकिन यह तो सत्य है कि वे प्राप्त प्रविष्टियों में सर्वश्रेष्ठ हैं. प्रविष्ट्रियों का मूल्यांकन

बड़े ही गोपनीय तरीके से एक निर्णायक मंडल द्वारा किया जाता है. किसी भी निर्णायक को रचनाकार का नाम व पते की जानकारी नहीं होती है. केवल रचनाएं दी जाती है. उन पर मूल्यांकन करना होता है. संस्थान का यह हमेशा प्रयास रहा है कि समाज सेवा के साथ ही साथ हिन्दी को विशेष स्थान दिलाया जाए. इस कारण ही बच्चों की काव्य प्रतियोगिताएं, हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को हिन्दी उदय सम्मान, २०१३ से छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था, संस्थान की पत्रिका में हिन्दीत्तर भाषियों व बच्चों के लिए विशेष स्तम्भ रखा गया हैं. हम आगे भी जैसे जैसे साधन बढ़ते जाएंगे हम अपने कार्यक्षेत्र को निरन्तर आगे बढ़ाते जाएंगे।'

कार्यक्रम में सदाशिव विश्वकर्मा, रजनीश तिवारी, मनमोहन सिंह कुशवाहा, जगमोहन, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, संगीता श्रीवास्तव, श्रीमती सपना गोस्वामी, श्रीमती सोना भारती, डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय, सत्य प्रकाश, सदाशिव विश्वकर्मा, आर.पी.उनियाल, श्रीमती जया, राकेश श्रीवास्तव, सहित तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित थे.

काश! हमने चीन के बारे में 'सरदार पटेल' की बात सुनी होती

✍ **समाज प्रवाह**, मुंबई

चीन की मंशा हमेशा से पड़ोसी देशों की जमीन हड़पने की रही है. सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जवाहरलाल नेहरू को एक पत्र में लिखा था 'हमें वस्तुस्थिति को समझना चाहिए और यह मानकर चलना चाहिये कि चीन हमारा सच्चा मित्र नहीं हो सकता. वह हमें अपना 'शत्रु' समझता है और आने वाले दिनों में वह हमें हर तरह से परेशान करेगा.' यदि पंडित नेहरू ने सरदार पटेल की बात मानी होती तो शायद भारत का इतिहास दूसरा ही होता.

पीछे मुड़कर यदि चीन के इतिहास को देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि चीन सदा से एक विस्तारवादी देश रहा है. उसकी मंशा हमेशा से यही रही है कि पड़ोसी देशों की जितनी भी संभव हो, जमीन हड़प ली जाए. यह काम चीन में तब भी होता था, जब वहां राजशाही थी.

इस संदर्भ में भारत के तत्कालीन उप-प्रधानमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल द्वारा एक महत्वपूर्ण पत्र प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को 7 नवम्बर 1950 को लिखा गया था. जिसमें सरदार पटेल ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'हमें वस्तुस्थिति को समझना चाहिए और यह मानकर चलना चाहिये कि चीन हमारा सच्चा मित्र नहीं हो सकता. वह हमें अपना 'शत्रु' समझता है और आने वाले दिनों में वह हमें हर तरह से परेशान करेगा.'

सरदार पटेल ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में लिखा कि 'तिब्बत सदा से एक स्वतंत्र देश रहा है और हर मामले में चाहे वह सांस्कृतिक हो या राजनीतिक, वह भारत के बहुत करीब रहा है.' सरदार पटेल ने उसी समय भविष्यवाणी की थी कि तिब्बत में जो कुछ हो रहा है, उससे ऐसा लगता है कि हम वहां बहुत दिनों तक दलाई लामा की रक्षा नहीं कर पायेंगे. सरदार पटेल का तो कुछ महीनों बाद स्वर्गवास हो गया लेकिन उन्होंने अपने पत्र में तिब्बत के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह शत-प्रतिशत सही निकली. कुछ वर्षो के बाद दलाई लामा को तिब्बत से भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी. जब चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया तो भारत सरकार ने सारी घटना पर एक 'श्वेत पत्र' निकाला, जिसमें विस्तार से इस बात का वर्णन है कि 'पंडित नेहरू ने बार-बार तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री चाउ-एन-लाई को लिखा था कि तिब्बत हमेशा से एक स्वतंत्र देश रहा है, अतः चीन का उस पर कब्जा करना उचित नहीं है.' इसके जवाब में चाउ-एन-लाई ने लिखा कि 'चीन तिब्बत की स्वायत्तता' को अक्षुण्ण रखेगा. उसकी संस्कृति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा. केवल पश्चिम के उपनिवेशवादी देशों से तिब्बत की रक्षा करने के लिए चीन ने तिब्बत में यह कदम उठाया है.'

पंडित नेहरू को ऐसा लगता था कि चीन और भारत दोनों पश्चिमी उपनिवेशवादी देशों के सताये हुए हैं. अतः आजादी मिलने पर दोनों स्वाभाविक रूप से मित्र हो जाएंगें, परन्तु दुर्भाग्यवश पंडित नेहरू ने चीन के इतिहास को व्यापक परिपेक्ष में पढ़ा नहीं था. इसी कारण यह भूल हो गई. अपने उपरोक्त पत्र में सरदार पटेल ने जो-जो चेतावनी दी, वे सब सही निकली. उन्होंने लिखा था कि चीन ने तिब्बत को तो हड़प ही लिया है, वह भारत की उत्तरी सीमा पर भी विद्रोहियों को भड़काने से बाज नहीं आएगा. उसकी नीयत साफ नहीं हैं. ऐसे में भारत का यह प्रयास कि चांग काई शेक की सरकार के स्थान पर, साम्यवादी चीन को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता मिल जाए, एक भयानक गलती होगी. एक बार यदि चीन संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन जाता है और सुरक्षा परिषद में उसे जगह मिल जाती है, तो वह सबसे पहले भारत को तंग करेगा.

गत सैकड़ो वर्षो से हिमालय उत्तरी सीमा में हमारा रक्षक रहा है. हम यह सोचकर चलते थे कि कोई हिमालय को लांघ कर भारत की भूमि में नहीं आ सकता, परन्तु अब जबकि तिब्बत का अस्तित्व ही समाप्त हो गया तो चीनियों के लिये हिमालय को लांघ कर भारत में आना कठिन नहीं होगा. सरदार पटेल की भविष्यवाणी बाद में शत-प्रतिशत सही निकली.

सरदार पटेल ने यह भी लिखा है कि '1914 में जब तिब्बत के मामले में भारत, तिब्बत और चीन के बीच एक समझौता हुआ तो उस समय की चीन की सरकार ने भी उसको मानने से इंकार कर दिया था.' इसी से यह पता चलता है कि चीन का इरादा कभी नेक नहीं था. सरदार पटेल ने यह भी लिखा है कि वर्तमान परिस्थितियों में चीन सही करे या गलत, रूस उसकी खुलेआम मदद करेगा. ऐसे में हम एक साथ कितने मोर्चो पर लड़ सकेंगे? उनका कहना था कि उत्तरी सीमा में बर्मा, नेपाल, भूटान और सिक्किम में

ऐ मेरे वतन के लोगों

इन प्रसिद्ध पंक्तियों के रचयिता थे रामचन्द्र द्विवेदी जिन्हें दुनिया कवि प्रदीप के नाम से जानती है. उनका जन्म 1915 को हुआ था. उन्हें शुरु से ही हिन्दी कविता लिखने और पढ़ने का शौक था. अपने अंदाज में वे कवि सम्मेलनों में श्रोताओं को मुग्ध कर देते थे. 24 वर्ष की आयु में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद उन्होंने अध्यापक बनने का निर्णय लिया. कवि सम्मेलनों के दौरान उनका प्रदीप हो गया.

प्रदीप जी को मुम्बई में एक कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिये बुलाया गया जहां उन्हें पहली फिल्म 'कंगन' के रूप में मिली. यह बात 1939 की है. प्रदीप जी कविता लिखते और गाते भी थे. 1940 में 'बंधन' आई जिसका गीत 'चल चल रे नौजवान' बेहद लोकप्रिय हुई. 1943 में 'किस्मत' आई जिसके गीत के बोल 'दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है.' हिट रहीं. 'जागृति' उनकी सबसे अच्छी फिल्म मानी जाती है जिसके गीत, 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दुस्तान की', 'हम लाए हैं तूफान से किश्ती निकाल के' एवं 'दे दी हमें आजादी बिना खड़क बिना ढाल' लोकप्रियता की बुलन्दियां छू गई. जब यह समझा जाने लगा कि प्रदीप जी के गानों की लोकप्रियता कम होने लगी थी तब 60 वर्ष की आयु में उनके गीतों से सजी 'जय संतोषी मां' ने सारे रिकार्ड तोड़ डाले. इन्होंने करीब 1700 गीत लिखे. इनके गीतों ने 72 फिल्मों की शोभा बढ़ाई.

प्रदीप जी एक जबर्दस्त देशभक्त थे. 1958 से उन्हें कवि प्रदीप के नाम से जाना जाने लगा. उन्हें 1961 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला. 1997 में उन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

इस महान कवि, गायक एवं देशभक्त की मृत्यु 11 दिसम्बर 1998 को 83 वर्ष की आयु में मुम्बई में हुई. उनकी स्मृतियों को प्रणाम.

-**डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा,** ग्वालियर, म.प्र.

मंगोल जाति के लोगों की बहुतायत है. चीन इन सबसे देखते ही देखते दोस्ती कर लेगा और हमारे लिये समस्याएं पैदा करता रहेगा.

अपने पत्र में सरदार पटेल ने जोर देकर लिखा है कि 'हमें किसी भी हालत में साम्यवादी चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बनने देना चाहिये. हमें इस बात से सबक लेना चाहिये कि जिस तरह उसने तिब्बत को हड़प लिया है, उसी तरह यदि वह एक बार संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन जाता है तो इतना ताकतवर हो जाएगा कि हमारी सीमा पर तेजी से अतिक्रमण करता रहेगा.' पीछे मुड़कर देखने से ऐसा लगता है कि चीन के बारे में पंडित नेहरू भावना में बह गये और उसके विस्तारवादी इतिहास को ठीक से पढ़ नहीं पाए, परन्तु पंडित नेहरू की भी लाचारी थी. माउंटबेटन के बहकावे में आकर वे कश्मीर समस्या को सुरक्षा-परिषद में ले गये थे. माउंटबेटन ने भरोसा दिलाया था कि सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन और उसका अनन्य मित्र अमेरिका भारत की पाकिस्तान के खिलाफ पूरी मदद करेगा. वे किसी भी हालत में इस पर राजी नहीं होगें कि कश्मीर में जनमत संग्रह कराया जाए, परन्तु सुरक्षा-परिषद में बात दूसरी निकली और ब्रिटेन तथा अमेरिका ने कश्मीर के मामले में खुलकर पाकिस्तान का साथ दिया और यह मांग की कि कश्मीर में जनमत संग्रह होना चाहिये. लाचार होकर पंडित नेहरू को सोवियत रूस की सहायता मांगनी पड़ी, जिसने सुरक्षा-परिषद में 'वीटो' करके कश्मीर के मामले में ब्रिटेन और अमेरिका की एक नहीं चलने दी.

सच कहा जाए तो अंग्रेजों ने भारत को इस बात के लिए कभी माफ नहीं किया कि भारत को आजादी मिल गई और भारत की देखा-देखी एशिया और अफ्रीका के दूसरे देश जो उसके उपनिवेश थे, वे भी आजाद हो गये. अतः भारत को सबक सिखाने के लिये ब्रिटेन और अमेरिका ने कश्मीर के मामले में हमेशा भारत को तंग किया और पंडित नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति का मजाक उड़ाया. उन दिनों सोवियत रूस और चीन दूध-पानी की तरह मिले थे और पंडित नेहरू को सोवियत रूस का समर्थन पाने के लिए चीन की हरकतों को नजरअंदाज करना पड़ा. यहां पर भारत से एक भयानक भूल हो गई. भारत चीन की धूर्तता को समझ नहीं पाया. सरदार पटेल के उपरोक्त पत्र में जो आशंकाएं व्यक्त की गई थी, सब सच निकली. जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया, तब पंडित नेहरू इस सदमें को बर्दाश्त नहीं कर सके. 1962 की लड़ाई में भारत की जो शर्मनाक हार हुई, उस आघात से पंडित नेहरू उबर नहीं पाये और कुछ महीनों के बाद 1964 में असमय ही उनका निधन हो गया. पीछे मुड़कर देखने से ऐसा लगता है कि यदि पंडित नेहरू ने सरदार पटेल की बात मानी होती तो शायद भारत का इतिहास दूसरा ही होता.

क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों?

✍ डॉ० इक़बाल अहमद मंसूरी शास्त्री,
भानपुरी, खजूरिया, उ.प्र.

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि जिनके बदौलत हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं और अंग्रेजों की गुलामी से देश को मुक्ति मिली वही आज उपेक्षित हैं। उनका परिवार आज दर-दर की ठोकरें खा रहा है. सरकार उन वीर देश भक्त क्रांतिकारियों और उनके परिवार को उतना महत्व नहीं दे रही है जितना की देना चाहिए. उनको सम्मान देने के नाम पर उनकी देश भक्ति एवं देश सेवा के एवज में मात्र चन्द रूपये पेंशन के रूप में देती है. जबकि राजनीति करने वाले सांसदों विधायकों आदि को उनसे कई गुना पेंशन एवं सुविधायें दी जाती हैं. देश सेवा के लिए दिये जाने वाले तमाम ऐसे सम्मानों को ऐसे व्यक्तियों को दिये जाते हैं जो आजादी की जंग लड़ने वालों के मुकाबले उनका योगदान कुछ भी नही है. जबकि भारत के सर्वोच्च सम्मान के हकदार पहले वे ही हैं जिन्होंने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने हेतु अपना घर परिवार, सुख सुविधा का त्याग किया तथा तमाम परेशानियों एवं संकटों का सामना किया, यहाँ तक कि कईयों को देश के लिए अपनी जान की कुर्वानी भी देनी पड़ी.

अफ़सोस तो इस बात का है कि सरकार किसी भी क्रांतिकारी शहिद का जन्मदिन नहीं मनाती और न हीं उनके जन्म दिन या शहिदी दिवस पर छुट्टी ही घोषित है. उनके जन्म दिन या शहिदी दिवस पर सरकार द्वारा न तो किसी प्रकार की शोक सभा या श्रद्धांजलि सभा ही आयोजित की जाती है. अलबता उनके बदौलत मिली आजादी की जश्न अवश्य मनाती है. सही मायने में तो आजादी की जंग लड़ने वाले वीर क्रांतिकारी ही सच्चे देश भक्त, देश के सच्चे सपूत और देशरत्न हैं. सर्व प्रथम उन्हें 'भारत रत्न' एवं 'परम वीर चक्र' से सुशोभित किया जाना चाहिए. परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के बाद भी उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' नही दिया गया. सवाल तो यह है कि क्या उनसे बढ़ कर कोई व्यक्ति देश भक्त ओर देश का सपूत है? क्या उनसे बढ़ कर किसी ने देश की सेवा की है? या देश के लिए त्याग किया है? यदि नहीं तो उन्हें यह सम्मान क्यों नही दिया गया?

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना घरबार छोड़ा, वतन का त्याग किया और तमाम झंझावातों से जुझते हुए विदेशों का भ्रमण कर विदेश में ही देश को आजाद कराने हेतु आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द सरकार का गठन किया तथा विदेश में ही प्राण त्याग दिया, रानी झांसी रेजिमेंट की प्रथम कैप्टन डॉ० लक्ष्मी सहगल, शहिदे आज़म सरदार अमर शहिद भगत सिंह, राज गुरू, सुखदेव, बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, तात्या टोपे, नाना सहेब, रानी लक्ष्मीबाई, लाला लाजपत राय, खुदीराम बोस, ख्वाजा नजिमुद्दीन, दादा भाई नौरोजी, रास बिहारी बोस, उधम सिंह आदी अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं जिनकी बदौलत हम आज गुलामी से मुक्त हैं.

सरकार द्वारा इन महान देश भक्त स्वतंत्रता सेनानियों की उपेक्षा का उदाहरण इससे बढ़ कर क्या हो सकता है कि शहिदे आजम भगत सिंह के चाचा सरदार अजित सिंह को अंग्रेजी हुकुमत का बागी करार देते हुए अंग्रेजों ने उन्हें सजा के तौर पर रंगून में कालापानी की सजा दी. जब देश आजाद हुआ तो वे स्वदेश लौटे. स्वाधीनता दिवस समारोह में भारत सरकार द्वारा उन्हें नहीं बुलाया गया जिससे क्षुब्ध होकर वे डलहौजी चले गये और वहीं बस गये. शहीदे आजम भगत सिंह का पूरा परिवार ही आजादी का दीवाना था. उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पंजाब में जट सिक्ख आन्दोलन चलाया था.

मै यह नहीं कहता कि देश का सर्वोच्च सम्मान किसी ऐसे योग्य व्यक्ति को न दिया जाये. बल्कि मेरा यह मानना है कि जिन्होंने देश को आजाद कराने हेतु अपना सर्वस्व त्याग किया उनके परिवार को उचित पेंशन व सुविधा दी जाये तथा मरणोपरान्त ही सही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीदे आज़म अमर शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरू, सुखदेव, उधम सिंह, रासबिहारी बोस आदि स्वतंत्रा संग्राम सेनानियों को देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया जाये।

(लेखक भाग्य दर्पण के संपादक हैं)

स्वतंत्र भारत के राजनैतिक पटल पर महाराणा प्रताप की भांति सिद्धांतों पर अडिग प्रो.बलराज मधोक

पूनम राजपुरोहित 'मानवताधर्मी'
(लेखक सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी विचारक-चिंतक, समसामयिक समालोचक-समीक्षक तथा भारतीय जनसंघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं प्रवक्ता है. यह लेख स्वयं लेखक की प्रकाशनाधीन पुस्तक ''स्वतन्त्र भारत की राजनीति के महाराणा प्रताप प्रो.मधोक'' के महत्वपूर्ण अंशों पर आधारित है।)
सम्पर्कः 47, बालाजी नगर, सांचौर, जिला-जालोर, राजस्थान-343041

25 फरवरी, 1920 को अस्कार्दू (जम्मू कश्मीर) में जन्म लेने वाले प्रो. बलराज मधोक का जीवन समग्र दृष्टि से भारतमाता के सच्चे सपूत की भूमिका पर खरा उतरता है. 1947 में कश्मीर को बचाने, भारतीय जनसंघ की 1951 में स्थापना और ऊँचाईयो तक ले जाने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है. उन्होंने राष्ट्रहित सर्वोपरि के मंत्र के साथ स्पष्ट एवं दूरदर्शी सांसद के तौर पर देश की साहसपूर्वक सेवा की तथा राजनीति में 'जीते जी शहीद' होना स्वीकार कर लिया परन्तु सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करने की अडिगता बनाए रखी.

प्रो.बलराज मधोक का जीवन सैद्धान्तिक दृष्टिकोण पर अडिग रहने वाले महानतम योद्धा की तरह है. उन्हें अपने कनिष्ठ रहे साथियों के हाथों मिले कभी खत्म न हो पाने वाले 'राजनैतिक वनवास' का गम है और न ही उनकी छांया में पल-पोसकर बड़े हुए वर्तमान के शीर्ष भाजपा नेताओं 'श्रीअटल-अडवानीजी' की बेरूखी-कृतघ्नता का कोई दुःख है. परन्तु उनकी वृद्ध आँखों में अपने हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तानी संस्कृति तथा राष्ट्रवाद के प्रति कम होती जा रही जन भावना की पीड़ा साफ-साफ झलकती महसुस की जा सकती है.

काँग्रेस के वास्तविक विकल्प के रूप में जनसंघ की स्थापना करने वालों में डा.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के बाद सबसे प्रमुख संस्थापक रहे प्रो.मधोक वर्तमान में कांग्रेस व भाजपा को एक दूसरे की फोटोकापी की भांति व्यवहार करते हुए देखकर दुःखी है. वो हृदय से एक ही चिन्ता प्रगट करते हैं कि भारतमाता की अखण्डता को खण्डित कर सकने वाले तेजी से ऊमड़ते साम्प्रदायिक एवं जातिय तुष्टीकरण के काले बादलों को कौन रोकेगा? सिद्धान्तिक प्रतिबद्धता वाले राजनैतिक विकल्प के बिना राष्ट्र का भविष्य कैसे सुरक्षित रह पायेगा?

प्रो. बलराज मधोक लोकमान्य तिलक की भाँति भारतीय राजनीति की उन गिनी-चूनी विभूतियों में से एक हैं जिन्होंने शिक्षा, साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में एक साथ विश्वपटल पर छाप छोड़ी है. भारतीय राजनीति, भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी में जिज्ञासा रखने वाले लोगों के लिए ही नहीं अपितु प्रबुद्ध चिन्तकों, इतिहासविदों

और जनसाधारण के लिए उनका जीवन चरित्र राष्ट्र के लिए जीवित रहते मर मिटने वाले 'जीवित शहीद' को चरितार्थ करते 'प्रेरणाकुंज' की तरह है.

स्वतन्त्र भारत की राजनीति के संक्रमण दौर में प्रो. मधोक का सम्पूर्ण जीवन 'महाराणा प्रताप' की भांति कहा जाये तो अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है. वो महाराणा प्रताप की ही तरह अपने मूलभूत सिद्धान्तों, स्वाभिमान, राष्ट्रवाद एवं हिन्दुत्व के लिए तमाम राजनैतिक प्रलोभनों और अवसरों को पुरी जिन्दगी ठुकराते रहे है. बेशक इसी कारण उन्हें जीवन के अन्तिम पड़ाव तक ''राजनैतिक वनवास'' के रूप में उपेक्षित जीवन जीना पड़ रहा है.

अगस्त 1947 में भयंकर ऊथल-पुथल के बाद पुरे राष्ट्र एवं स्वतन्त्रता के आन्दोलनकारियों को खंडित आजादी के साथ ही विश्राम मिल गया था परन्तु प्रो.मधोक एवं उनके साथियों को तो अक्टूबर 1947 में भारतीय सेना के श्रीनगर पहुँचने तक कबायलियों

प्रो.बलराज मधोक का जीवन सैद्धान्तिक दृष्टिकोण पर अडिग रहने वाले महानतम योद्धा की तरह है. उनकी आँखों में हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तानी संस्कृति तथा राष्ट्रवाद के प्रति कम होती जन भावना की पीड़ा साफ-साफ झलकती है. कॉंग्रेस के विकल्प के रूप में जनसंघ की स्थापना करने वाले प्रो.मधोक वर्तमान में कांग्रेस व भाजपा को एक दूसरे की फोटोकापी की भांति देखकर दु:खी है.

वो आजादी पूर्व के वृहद जम्मु-कश्मीर के संघ प्रमुख थे. वो संघ के वरिष्ठ प्रचारक होने के कारण पं. नेहरू और शेख अब्बदुला के कोप के शिकार बनते रहे. उनको कई बार जान से मारने के प्रयास हुए.

के भेष में चढ़ाई कर चुकी पाकिस्तानी सेना से सीधे जुझना पड़ा था. जान की बाजी लगाकर प्रो. मधोक व उनके साथियों की अगुवाई में वर्तमान भारतीय नियन्त्रण वाले कश्मीर को बचाया जा सका था.

उन्होंने 'जम्मु कश्मीर प्रजा परिषद' की नींव पं. प्रेमनाथ डोगरा के साथ मिलकर रखी थी. वो आजादी पूर्व के वृहद जम्मु-कश्मीर के संघ प्रमुख थे. वो संघ के वरिष्ठ प्रचारक होने के कारण पं. नेहरू और शेख अब्बदुला के कोप के शिकार बनते रहे. उनको कई बार जान से मारने के प्रयास हुए तथा उनकी हिन्दुत्व-राष्ट्रवाद पर अडिगता के चलते जम्मु कश्मीर से शेख अब्दुला सरकार द्वारा निष्कासित कर पुरे परिवार के साथ रातों-रात 'दर-बदर' कर दिया गया.

प्रो. मधोक संघ के वरिष्ठतम प्रचारक तथा जनसंघ के वरिष्ठतम नेता रहे है. उन्होंने राष्ट्रीय हितों के लिए सदैव एक साहसी, स्पष्टवादी, दूरदर्शी तथा राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को तर्कसंगत रूप से पेश करने वाले वरिष्ठ राजनीतिज्ञ की भूमिका निभाई. 1950 में डा.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश किया और एकात्म मानवाद के दृष्टा पं.दीनदयाल उपाध्यायजी के जीवन पर्यन्त अन्तिम साथी रहे. वो भारतीय जनसंघ जिसकी फसल पर आज भाजपा राजनैतिक रोटियाँ पका रही है, उसकी स्थापना में डा. मुखर्जी के बाद सबसे वरिष्ठतम संस्थापक सदस्य हैं. उन्होंने ही संस्थापक संयोजक के नाते भारतीय जनसंघ का पहला घोषणा पत्र तैयार किया था.

उन्होंने 1961 व 1967 में लोकसभा का नई दिल्ली व दक्षिण दिल्ली से प्रतिनिधित्व किया. सदन में प्रो.मधोक के सामने पं. जवाहरलाल नेहरू को पूर्तगालीयों से गोवा को आजाद कराने और श्रीराम जन्मभूमि, काशी विश्वनाथ एवं मथुरा के श्रीकृष्ण मंदिर को हिन्दुओं को सौंपने जैसे मुद्दों सहित अनेक बार 'बगलें झाँकने' को मजबूर होना पड़ा था. उस दौर की भारतीय राजनीति में प्रो.मधोक एकमात्र शख्सियत थे जिनसे पंडित नेहरू जैसे वरिष्ठ राननीतिज्ञ को राष्ट्रवाद व हिन्दुत्व के विषय पर सदैव मात खानी पड़ी.

डा.मुखर्जी के निधन के काफी बाद राजनीति में पर्दापण करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री क्रमशः श्रीअटल बिहारी वाजपेयी एवं श्रीलाल कृष्ण अडवाणी जैसे नेताओं ने प्रो. मधोक व पं. दीनदयाल उपाध्याय के कठोर परिश्रम से तैयार सीढियों के बल पर ही राष्ट्रीय राजनीति में मुकाम पाया है. यह बात बहुत कम चर्चा में लायी गयी है कि प्रो.मधोक के अध्यक्षीय कार्यकाल तक पं.उपाध्यायजी भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री रहे थे तथा 1967 में प्रो.मधोक के निर्वतमान होने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष बने. प्रो.मधोक के कार्यकाल में भारतीय जनसंघ चरमोत्कर्ष पर पहुँचा. उस वक्त लोकसभा में जनसंघ गठबन्धन के पास 100 से अधिक सीटें थी. पंजाब व यू.पी. में जनसंघ की संयुक्त सरकारें बनी और उत्तर प्रदेश, राजस्थान सहित देश के 8 प्रमुख राज्यों में जनसंघ मुख्य विपक्षी दल बनकर उभरा था.

वो देश की सुरक्षा सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे तथा उन्होंने अनेक बार अस्थायी अध्यक्ष के रूप में लोकसभा की अध्यक्षता करते यादगार भूमिका निभाई. 60 के दशक में 'प्रो. मधोक इज जनसंघ एण्ड जनसंघ इज मधोक' के दौर में राष्ट्रीय बहस का मुद्दा रहा 'भारतीयकरण' आज भी प्रासंगिक है. प्रो. मधोक ने लगभग पुरे विश्व का भ्रमण किया है तथा अपने समकालीन विश्व राजनेताओं में उनकी उच्च्व स्तरीय निर्णायक, राष्ट्रवादी नायक की छवि रही है. उनकी लिखी गई लगभग दो दर्जन से अधिक पुस्तकें भावी पीढियों के लिए पिछले 100 वर्षो के राजनैतिक सत्य एवं इतिहास को समझने हेतु 'अमिट धरोहर' हैं.

मुझे (लेखक) कई दशकों से प्रो. मधोकजी के अभिन्न साथी होने का सुअवसर मिला है. उनकी भारत माँ के प्रति अनवरत सजग संवेदनाओं व पीड़ाओं को नजदीकी से अनुभव करने

का ही नहीं बल्कि उनके साथ अनुभूत और अभिभूत होने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है. प्रो.मधोक के समग्र जीवन चिन्तन का यही सार संक्षेप निकलकर समझ आता है कि आज पुनः भारतीय राजनीति को वैचारिक एवं सिद्धान्तिक दृष्टि से द्विध्रुवीय स्वरूप प्रदान करने की महत्ती आवश्यकता है।

अतः देश के सभी राष्ट्रवादी -हिन्दुत्ववादी तत्वों द्वारा प्रो.मधोक जैसे 'जीवित शहीद' के 94वें जन्मदिन पर सच्चा व सजीव अभिनन्दन एकजुटता के साथ सांप्रदायिक एवं जातिय तुष्टीकरण के खिलाफ प्रतिबद्धता दिखाने तथा सही अर्थों में राष्ट्रवाद एवं धर्मनिरपेक्षता के मूलभूत सिद्धान्तों को अपनाने का संकल्प लेना ही हो सकता है. ऐसा करना न केवल प्रो.मधोकजी के जीते-जी अधुरे स्वप्नों के साकार होने की दिशा में आगे बढ़ना होगा अपितु स्व.नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, वीर सावरकर, सरदार बल्लभ भाई पटेल, डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय इत्यादि महापुरूषों के जीवन मूल्यों के प्रति भी सच्ची श्रद्धाँन्जली होगी.

++++++++++

आवश्यक सूचना

पत्रिका के 12वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना 15. 06.2013 तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये .... नकद/ धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक...........

बैंक का नाम...

2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :...

पता :...

....

....पिन कोड..........

दूरभाष/मो0..........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.

03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

होली पर विशेष

होली का आगमन

मौसम मादक हुआ हवा महकी महकी है,
दूर आम की डाली पर कोयल चहकी है।
होली का आगम हुआ है, मन आंगन में,
अंग उमंग तरंग सांस बहकी-बहकी है।
नभ में इन्द्र धनुष की सतरंगी चुनर है,
धरती के माथे पर फूलों की झूमर है।
गली मोहल्लों में रंग की बरसात हो रही,
रंगों से बच, इधर उधर जाना दूभर है।
गीत गा रही हैं सुहागिनें बौराई सी,
कहीं-कहीं है आंख मिचौली शरमाई सी।
पीकर भंग अनंग हुए है कुंवर कन्हाई,
उजली-उजली धूप हुई है अलसाई सी।
होली के दिन शिकवे गिले नहीं होते हैं,
कुछ करते है नशा और पीकर सोते हैं।
रंगों में उल्लसित तरंगित मन मतवारे,
सद्‌बुद्धि सज्जन तो होश नहीं खोते हैं।
परिजन पुरजन सबके हाथ गुलाल सने है,
टेसू का रंग भर पिचकारी, सभी तने है।
हाथ और मुंह काले-पीले रंग-बिरंगे,
मस्ती में कुछ झूम रहे, कुछ बने ठने हैं।
बेगाने तो दूर-दूर से ताक रहे हैं,
केवल अपने ही अपनापन आंक रहे है।
चहक रहे हैं कुछ तो, कुछ बिल्कुल गुमसुम है,
खड़े नयन में इक दूजे के, झांक रहे हैं।
रंग-बिरंगी मतवारी होली आयी है,
बच्चें बूढ़े सबके ही मन को भायी है।
सबको शुभ हो होली का त्यौहार सलोना,
यही भावना प्रिय सुकामना मन भायी है।

-हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ.प्र.

होरी का हुड़दंग

मौसमी बहार में बह रही थी जब फागुन की फगुनाहट,
बौछारों से भींज रही होरी की रंगीली गनगनाहट।
दौड़े दौड़े चले आ रहे थे घर घर के लोकजन,
अपनी अपनी उमंगों में मगन हो रहे थे मानवमन।
देख कर के यह नज़ारा ज़मी संग आसमां का मिलन,
जनमानस का भी उमड़ पड़ा एक दूजे प्यार का चलन।
लेकर प्रेम पिचकारी छोड़ रहे थे आपस में धुआंधार,
दुश्मनी भुलाकर जम रहा था दमदार दोस्ती का दरबार।
यह था जीवन का दृश्य मनोहर जो सभी को भा रहा था,
मानो प्रत्येक प्राणी होरी का प्रिय प्रसाद पा रहा था।
यानि भंग की तरंग में तराबोर मन मयूर नाच रहे थे,
भावना के भावुक मन गीतों में कविता बांच रहे थे।
सुन सुन कर जनता जर्नादन का भी हृदय पुलकित हो गया,
फागुनी फुहार में प्रत्येक जन का तन मन विकसित हो गया।
तभी बालक बनिता युवा वृद्ध के फड़कन लागे अंग अंग,
उड़ा उड़ा कर लाल गुलाल मचा रहे होरी को हुड़दंग।
यह प्रीति मीत की होली रीति नीति का हमजोली स्वभाव।
हिल मिलकर के प्रेम रस के रंग में भर दें 'मंगल' सद्‌भाव।।

-श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल', राजाकटरा, कोलकाता

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचना

यादों को हमने खोने न दिया, गमों ने हमें चुप होने नहीं दिया, आंखे जो आज भी भर आई उनकी याद में, पर उनकी हंसती हुई सुरत ने हमे रोने ना दिया।

मो० ०८६५७१२४४६०

फ्रें+ इंड, गर्ल फ्रें+ इंड, ब्वाय फ्रें+ इंड सबमें इंड है लेकिन फेमिली 'फे+मिली' जिसमें 'आई लव यू' है. इसकी कदर करो ये सबसे कीमती है

मो०८६०२६७८४५६

होली गीत

प्रेम प्रति सौगात है होली
रंगों की बरसात है होली।
दुश्मन को भी गले लगा दें,
ऐसी अद्‌भुत बात है होली।

मधुर मिलन संगीत है होली।
दिल से दिल की प्रीति है होली।।
अहंकार की भीत गिरा दे
सच्चाई की जीत है होली।।

भक्ति भाव संयुक्त है होली,
हर बुराई से मुक्त है होली,
जो चाहे इसको अपनायें,
हर दिल को उपयुक्त है होली।।

प्रेम भाव अनन्त है होली।
प्रहलादी बसन्त है होली।।
हिरणा-कश्यप और होलिका।
के पापों का अन्त है होली।।

जवां दिलों का जोश है होली
बूढ़ों का भी होश है होली।
बनी पुजारिन मानवता की।
प्रसन्न चित 'सन्तोष' है होली।।

-सन्तोष कुमार साहू, जालौन, उ.प्र.

विश्व स्नेह समाज की आगामी परिचर्चा

विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज ?

अपने विचार २० अप्रैल २०१३ तक अधिकतम २५० शब्दों में एक फोटो के साथ प्रेषित कर देवें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा

डॉक्टर का पत्र पत्नी के नाम

मेरी प्यारी एन्टीबायोटिक
सरला स्वराज
सुबह, दोपहर, शाम
प्यार की
तीन मीठी सी खुराक
डरता हूं
इसलिए
विनम्र निवेदन करता हूं
मुझ गरीब से तुम
क्यों दूर रहती हो इतना
स्टेन्डर्ड कम्पनी की महंगी दवाई
रहती है मुझसे जितना
मैं तुम्हारे प्यार का
हार्ट पेसेन्ट हूं
सेन्ट परसेन्ट हूं
ऐसा डाक्टर ने बतलाया है
क्योंकि
एक्सरे में तुम्हारा चित्र
स्पष्ट नजर आया है
तुम्हारी जुदाई मुझे
ब्लड टेस्ट की सुई सी चुभ रही है
यह दूरी मुझे
दर्द निवारक इंजेक्शन की तरह
सहन नहीं होती
काश!
तुम मेरे पास होतीं।
डॉक्टर की टॉर्च की तरह चमकती
तुम्हारी आंखें
स्टेथिस्कोप सी फैली
लचकदार बांहे
रूई के फाहे की तरह
कोमल स्पर्श तुम्हारा
और
तेज बुखार में
थर्मामीटर की तरह बढ़ता
तुम्हारा
गुस्से का पारा
हमको भाता है
बहुत याद आता है।
तुम
मायके जाने की खुशी में
गर्म पानी की थैली में भरे
पानी के समान
फूल रही हो
और मैं
तुम्हारी याद में
ग्लूकोज चढ़ रही
बोतल के समान
पिचकता जा रहा हूं
चिपकता जा रहा हूं।
सच कहता हूं
तुम मेरी
सभी रोगों की
एन्टीबायोटिक दवा हो
तुम्हारी कसम
तुम हो मेरे लिए
स्वर्ण भस्म।
तुम हमारी आपसी नोंक-झोंक को
अब भूल जाओ
और इसे
कैंसर या एड्स की तरह
लाइलाज मत बनाओ
अब लौट आओ
अब लौट आओ
अब लौट आओ।

-कवि सुधीर गुप्ता 'चक्र' झांसी,उप्र.

वेरी ब्यूटीफूल सेन्टेंस टू लाईफः 'एवरीवन सीम्स टू बी स्पेशल एट फर्स्ट लूक बट, वनली वेरी फ्यू वील रिमेन स्पेशल टू यू टील योर लास्ट लूक...' **एस.एम.एस.रचना**

कविताएं

काश

झोपड़ी में एक रात सोने से देश का सूरज नहीं चमकेगा।
काश! ये दिखावा करने वाले हमारा दुख समझ
पाते कि झोपड़ी और अंधेरे के बीच से निकल
कर किसी बड़े शहर के विश्वविद्यालय तक का
मार्ग तय करने वाले छात्र ने ढिबरी के उजाले
में किस प्रकार अपने संपनो को आकार दिया।
ऊपर से मां-बाप पर और गाज गिरती है
जब बेटे या बेटी का फोन आता है
बाऊजी फीस बढ़ गयी!
वैसे यदि मेरा वश चले तो इन खास दरबार
के राजाओं को केवल एक दिन दीपावली
के शुभ अवसर पर आम दरबार के बीच की सैर करा दूं।
आम जनता के बीच धक्का-मुक्की ट्रैफिक
पुलिस के बेतरतीब इशारे और जाम के
बीच से इनसे ही माटी की दिपाली खरीदवाऊं
और अपने गांव की उस झोपड़ी को रोशन करवाऊं,
जिसके अधेरे से इनके महल चमकते हैं।

-श्रीमती पुष्पा शैली, रायबरेली, उ.प्र.

मुक्तक

कभी विध्वंस के आगे न अपना सर झुकायेंगे
सृजन के गीत गाये हैं सृजन के गीत गायेंगे
अंधेरे हैं सघन पर हौसले भी कम नहीं मेरे
ज़माने में सदा उम्मीद का सूरज उगाएंगे
देखिये मझधार में अपना सफीना हो गया
आज के हालात में दुश्वार जीना हो गया
स्वार्थ के माहौल में चाले घिनौनी चल रहा
आदमी इस दौर का कितना कमीना हो गया।
तेरी उल्फत की नगरी में हमारा अब बसेरा है
हमारे पास जो कुछ है वो सब कुछ सिर्फ तेरा है
तेरे रहमो-करम पर हैं हमारी अब सभी खुशियां
नज़र डाले उजाला है नज़र फेरे अंधेरा है।
हमारी भावनाओं में छुपा हर मर्म भारत है
ये तन जिसको समर्पित है वो प्यारा कर्म भारत है
समाहित है हमारे मन की हर पहचान इसमें ही,
हमारी जाति भारत है हमारा धर्म भारत है।

-डॉ. दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'
बलरामपुर, उ.प्र.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वालों को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषियों को सुश्री शांताबाई व हिन्दी भाषी राज्यों में स्व.पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति हिन्दी छात्रवृत्ति

इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में 80प्रतिशत अंक पाने छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी. इसमें छात्र/छात्रा को इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर के अंक पत्र की प्रधानाचार्य/प्राचार्य/विभागाध्यक्ष से प्रमाणित छाया प्रति, नाम, पिता का नाम, सम्पूर्ण पता, एक फोटो, दूरभाष/मोबाइल संख्या/ई मेल के साथ ३० अक्टूबर 2013 तक भेजना होगा. इसमें चयनित छात्रों को 100 रुपये से लेकर 500/रुपये मासिक तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी.

विशेषः

01 छात्रवृत्ति की संख्या का निर्धारण संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा। 02 हिन्दीत्तर भाषी छात्र/छात्राओं को वरीयता दी जाएगी. प्रत्येक वर्ष अंक पत्र भेजना अनिवार्य होगा. तब तक हिन्दी विषय में 80प्रतिशत या उससे अधिक अंक मिलते रहेंगे यह छात्रवृत्ति जारी रहेगी. 03 विवरण के साथ एक नाम पता लिखा लिफाफा, व २५ रुपये का डाक टिकट भेजना होगा. 04 जिस विद्यालय के छात्र/छात्राओं का चयन लगातार पांच वर्ष तक होगा उस विद्यालय के हिन्दी विषय के प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. 05 जो प्रतिभागी लगातार तीन वर्ष तक यह छात्रवृत्ति प्राप्त करेगा उसे हिन्दी उदय सम्मान से एक गरिमामय कार्यक्रम में सम्मानित भी किया जाएगा. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

कविताएं

३० मार्च राजस्थान दिवस पर

रणबंको राजस्थान

इण धरती रांणा हमीर, सांगा प्रताप नै ज़लम दियो।
चंद्रसेन जयमल पत्ता, दुरगा बाबा सूं मोद कियो।
अमर कहाणी अमरसिंघ नै, सूखीर सैतांन री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकैं राजस्थान री।।
दुरसा आढ़ा, मेहा बीठू, पीथल कमधज री धरती।
केसव माडण, जग्गा खिड़िया, वीरमांण रतनू धरती।
जलमभोम मीसण सूरजमल, कविया करणीदान री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकै राजस्थान री।।
दादू रजब पीपा, जाँभा ईसर, अतलू संत हुआ।
नरहर नै रिघदास, कैसरा, सुन्दर भगत अनंत हुआ।
मेड़तणी मीरा रै पद् में गूंज धरा असमांन री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकैं राजस्थान री।।
पणिहारी, मखण नै आयल मूमल जैड़ा गीत अठै।
गोरबंध बायरियो, घूमर, ओलू, कुरजां प्रीत अठै।
मधकर हंजलै सूवटियै में, टीप सुरीली तांन री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकै राजस्थान री।।
सांवणियै री तीज सुरंगी, मस्ती सूं हींडा झूलै।
गोरड़ियां गणगौर नाच में, भंवर संग आपौ भूलै।
आखातीज तिंवार उमंग रो, मूंगस है मेहमांन री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकै राजस्थान री।।
धोरा धरती बणी ऊजली, भिनोड़ा भाखर सोहै।
अलगूजां री टीम गवाला, मगंरा में मनड़ो सोहै।
पदमणियां री लाज प्रसिद्ध है, आनं बानं इन्सान री।
अजब अनूठी बातां इण रणबकै राजस्थान री।।

संकलनकर्ताः देवदत्त शर्मा 'दाधीच',
जयपुर, राजस्थान मो० ९४१४२५१७३९

वंदे मातरम (लघु कथा संग्रह)

जय श्रीराम काव्य संग्रह

रचनाकारः
आचार्य यदुमणि कुम्हार

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११ मो०९३३५१५५९४९

डॉ० बृजेश सिंह

काली दौलत की बदौलत असरदार हो गये।
समाज की नैया के वो खेवनहार हो गये।।
सत्कर्मो के बल ऊपर उठना बहुत ही कठिन।
आगे बढ़ने के लिए जरूरी व्याभिचार हो गये।।
ईमान पर रहने वालों की अब पूछ परख कहां।
वो लूट की बदौलत बहुत दमदार हो गये।।
दलाली हेराफेरी से कई आलीशान बंगले।
महज मेहनत के भरोसे जो, कर्जदार हो गये।।
आगे बढ़ने की हवस, दर बदर नाक रगड़े मगर।
वो दुनिया की निगाहों में पानीदार हो गये।।

2

अंधेरे में खुदपरस्ती, उजाले में उदार हो गये।
समाज की निगाहों में बड़े मानदार हो गये।।
वो गाल बजाते थकते नहीं थे अक्सर मगर।
सच का इम्तिहान आया तो पार हो गये।।
कामयाबी के लिए किसी हद तक गिरना मंजूर।
इस कदर आज लोग भारी समझदार हो गये।
अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और ही वो।
कोई जान न सका उनको, ऐसे फनकार हो गये।।
जुबां फिसल गई या दिल की बात जुबां पे आ गई।
असलियत सामने आई तो शर्मसर हो गये।।

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03—**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), 04-**राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). 05-**राष्ट्रभाषा सम्मान**-(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) 06-**कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) 09-**राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), 10-**पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), 11-**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) 12-**प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) 13-**युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, 18-**विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 19-**डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) 24-**विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

<u>विशेष</u>:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०ः ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में
सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः..
पताः..
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...विधा....................वर्ष.........................
प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................
संख्या.......................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

प्रस्तावक
नाम.............................
हस्ताक्षर..........................
पूरा पता.......................

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर...................................
पूरा नाम...................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति   ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक   ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए १० गीत/१०ग़ज़ल/१० नई कविताएं,/१००दोहे **गद्य खण्ड** के लिए ५ लेख/५ संस्मरण **कहानी खंड** के लिए ५ कहानियां/१० लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को १५ पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व १५००/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

पानी ने बेपानी किया

-डॉ. तारा सिंह, मुंबई, महाराष्ट्र

बेटा! बेटा! का रट लगाते शांता की जिह्वा घिस गई. पर मन नहीं भरा. भरे भी तो कैसे? जिस बेटे के लिए उसने दिन को दिन, रात को रात नहीं समझा. कहां से दो पैसै ज्यादा घर में ला सकूं, जिससे बेटे को सुखी रख सकूं. इसके लिए जवानी में शांता ने क्या नहीं किया? कोयले के बुरादे से गुल तैयार कर, पोखर से मिट्टी लाकर, कलई किये हुये थाली में चूल्हा तैयार कर बेटे को समय पर खाना देकर स्कूल और कालेज की पढ़ाई जो पूरी कराई. रात को जब सब्जी बाज़ार बंद होने पर आता था, रात के अंधेरे में, बाज़ार से बची-खुची सब्जियों से छानकर सब्जियां लाना, राशन की दुकान पर घंटो कतार में खड़ी होकर चावल-गेहूं लाना, ना जाने उसने उस बेटे को बड़ा साहब बनाने के ख्वाब में क्या-क्या नहीं किया. अगल-बगल के पड़ोसियों से कहते नहीं थकती थी, 'देखना! मेरा बेटा जब बड़ा आदमी बन जायेगा, मेरे दिन भी फ़िर जायेंगें.' बरसात के महीने में, रात को मसहरी के ऊपर शांता पोलीथीन बिछाना नहीं भूलती थी. भूलती भी कैसे, बरसात की बूंदे टप-टप कर बेटे के ऊपर जो गिरतीं. हर दो घंटे में पोलीथीन के पानी को फ़ेंकना, फ़िर सोना अर्थात दिन भर की दौड़-धूप व रात को शांता की बदनसीबी शांता को सोने कहां दिया कभी. फ़िर भी शांता खुश थी. बस एक स्वप्न को सहेजे, मेरा बेटा बड़ा आदमी बनेगा, तब मेरी यह बदसूरत जिंदगी, खुद-ब-खुद सज उठेगी.

लेकिन शांता को यह पता नहीं था कि वह जिस स्वप्न में यह ख्वाब देख रही है, उस स्वप्न के टूटने भर की देरी है और वही हुआ भी. आखिर, स्वप्न कब तक चलता. एक दिन बेटा सचमुच जब बड़ा होकर, एक आफ़िसर बना, शांता की तकदीर उसके साथ ही बद से बदतर होने लगी. त्याग और तपस्या के दिन को याद कर आज भी सुबक-सुबक कर रोया करती है. इसलिए नहीं कि मैंने बेटा के लिए इतना त्याग क्यों किया? वो तो आज भी, तिनका-तिनका को जोड़कर, उस पर बेटा का नाम लिखती है. कहती है, 'मेरे बाद मेरे पास जो भी है, सब उसी का तो है.' बेटे की खुशी से खुशी, दुख से दुखी होकर जीने वाली शांता को आखिर आज मान लेना पड़ा कि हर तपस्या का फ़ल तपस्वी को मिले, जरूरी नहीं. कभी-कभी सारी जिंदगी की तपस्या भी तकदीर के सामने निष्फ़ल होती है और वही हुआ भी.

आज जब जिंदगी की शाम ढ़लने आई है, हर मां की तरह शांता भी अपनी जिंदगी के बचे-खुचे दिन बेटे के साथ निभाना चाही. फ़ोन पर बातचीत करते हुए शांता ने पूछा, 'बेटा! क्या तुम्हारे फ्लैट में पानी की किल्लत तो नहीं है. (क्योंकि पानी की किल्लत होने की बात, शांता बेटे के मुंह से कई वर्षो से सुनती आई थी.) बेटे का जवाब था, 'क्यों क्या बात है, तुम तो इस तरह पूछ रही हो, जैसे किल्लत रहने से तुम दूर कर दोगी. शांता बोली, 'नहीं बेटा! अब तो तुम बड़ा आफ़िसर बन गया, लाख की तनख्वाह है. तुम चाहो तो अच्छी जगह, जहां पानी की कमी न हो, वैसा फ्लैट खरीद सकते हो. मेरे पास अब बचा ही क्या, जिसे देकर इस परेशानी से तुम्हें निजाद दिला सकूं. मेरे पास जो कुछ थे गहने, घर, तुम्हारे पिता के प्रोविडेन्ट फंड के पैसे, सब तो पहले ही निकालकर तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई में लगा दिया. दो बीघे जमीन थे, उसे भी तुम्हें इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला के लिए बेच दिया ताकि तुम कम्प्यूटर इंजीनियर बन सको. अब पेंशन के पैसे है, हम पति-पत्नि के पास और तो कुछ है नहीं. मैं तो इसलिए पूछ रही थी कि अकेले रहते-रहते जी उब गया. इसलिए सोची, कुछ दिनों के लिए पोते के पास चली जाऊँ. पोते के पास खेलकर दिन बीत जायेंगें. तुम जब शाम को घर लौटोगे, तो तुम्हारे साथ बैठकर, तुम्हारे कंधों का सहारा लेकर, ज़िदगी के सफ़र को कुछ आसान कर लूंगी. बहु को भी देखे बहुत दिन बीत गये. मेरी बहु बड़ी अच्छी है. मेरी सेवा करे न करे, फोन पर प्रणाम मम्मी कहना कभी नहीं भूलती है. बड़ी संस्कारी है. बेटा क्या काम का बोझ कुछ ज्यादा आ पड़ा है? तुम्हारी आवाज में बहुत झुंझलाहट है.

क्या बात है बेटा, मुझे भी बताओ. पहले तो थोड़ी सी चोट लगती थी, तो गोद में घंटो बैठकर मुझे चोट लगी जगह को बता-बता कर रोता था. जिस चीज से तुमको चोट लगती थी, जब तक मैं उसे जाकर मारती नहीं थी, चाहे वह खिड़की हो या दरवाजा या खाट, तब तक तुम चुप नहीं होते थे. याद है न बेटा?' भावावेश में शांता, ३५ साल के बेटे को फिर से पांच साल का सोचकर उसे शांत

करने की कोशिश करती जा रही थी. लेकिन बेटा था कि जिसे पत्नी को नाराज कर मां-बाप का बोझ उठाना पसंद नहीं था. उसे मालूम था, मेरे मां-बाप के आने पर मेरी पत्नी की व्यवस्तता बढ़ जायेगी. दिन को टी.वी. देखना, बिल्डिंग की औरतों के साथ गप्पे लड़ाना, शायद संभव नहीं होगा. बेटा किसी भी शर्त पर अपनी मृगनयनी को नाराज नहीं करना चाहता था. इसलिए बात इधर-उधर की न कहकर, बिना किसी लाग-लपेट का कह गया, 'मां तुम्हारा पोता दिन भर स्कूल में रहता है और मैं दिन भर आफिस में. रात को नौ बजे घर लौटता हूं. तुम्हीं सोचो ऐसे में तुम यहां आकर क्या करोगी? यहां आकर तुम्हारा अकेलापन और बढ़ जायेगा. तुम जहां हो, वहीं थोड़ा सुबह-शाम घूम लिया करो. रही पानी की बात, वो तो तुमको मालूम है, यहां पानी की किल्लत है.'

बेटे से फ़ोन रखती हूं, फिर बात करूंगी, कहती हुई शांता ने फोन रख दिया. बूढ़ी आंखो से अश्रु पोछते हुए बोली, 'सब तकदीर है बेटा! तुम्हारे घर का पानी मुझे इस तरह बेपानी करेगा, मालूम नहीं था. मुझे माफ़ करो. तुम अपने घर के पानी की व्यवस्था करो, मैं अपनी जिंदगी के पानी को बचाने की कोशिश करूंगी.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखानऊ-0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजें. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयोग प्रदान करें.❑संपादक

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

मृत्यू के बाद

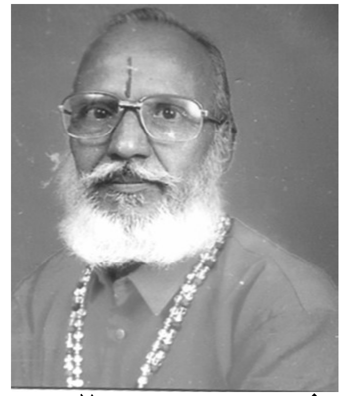

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

वर्तमान समय के आडम्बर में उलझ कर मनुष्य, जीवन के सत्य को भूल चुका है और आध्यात्मिक आडम्बर में ही जीवन के सत्य को तलाशने का प्रयास करता है तो दूसरी तरफ परिवार के मोह का वशीभूत होकर अनाप-शनाप धनोपार्जन करने में व्यस्त है. जन्म मरण के चक्रव्यूह से मुक्ति की आकांक्षाए करता है. आडम्बर दिखावा प्रभू भक्ति का साधन नहीं है. प्रभु भक्ति का साधन तो मात्र मूक साधना है. इसके लिए धूप-दीप प्रसाद अनुष्ठान की जरूरत नहीं होती. प्रभू ही सर्वशक्तिमान, सर्वव्याप्त, ऊर्जास्वरूप में हर जगह है. उनको साकार रूप ऊँ है. ऊँ के निरंतर मानसिक जाप से ही प्रभू प्राप्ति संभव है जो मृत्युपरान्त अनन्तमार्ग के भव सागर के तारक-कर्ता हैं. इसके लिए किसी अनुष्ठान आडम्बर की आवश्यकता नहीं है. प्रभु ने स्वयं कहा है, 'ए मनुष्य तू अपने आप को मुझ कर्ता पालक में समाहित-समर्पण कर दें, तो तेरी सुरक्षा करने वाला केवल मैं ही हूं. मेरी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता तो तू कारक कर्ता कैसा? तू तो मेरा अंश मात्र है, मैं ही समस्त सांसारिक जीव प्राणियों में ज्योर्ति आत्मा स्वरुप में विराजमान हूं, तो फिर तू मेरी तलाश पंचभूतों में क्यों करता है? अन्दर छूपा बैठा मुझ परमात्मा को नहीं देख सकता. भौतिक संसार में ढूंढता फिरता है. मन्दिरों के मूर्क मूर्तियों में तलाशता रहता है. मेरा अस्तित्व हर जीव प्राणियों, पशु-पक्षी कीट-पतंगों में है. जीव प्राणियों की निष्काम सेवा ही मुझ परमेश्वर तक पहुंचने का सरल और सुगम मार्ग है.

केवल जीवन जीना, मायामोह, लोभ, क्रोध, अहंकार से वशीभूत होकर जीवनोपार्जन करना ही जीवन नहीं है. इससे आगे मृत्यूपरान्त भी जीवन है, उसके लिए जीवन में क्या किया? इस पर चिंतन-मनन और व्यवहार मनुष्य नहीं करता यही जीवन में भारी कष्ट विपदाओं और मृत्युपरान्त अनन्तमार्ग की भयंकर यातनाएं एक कारण है.

प्रत्येक मनुष्य, जन्म से लेकर मृत्युकाल तक सांसारिक भौतिक माया-मोह, लोभ, क्रोध और अहंकार में इतना संलिप्त रहता है कि इसी नाशवान जीवन को हीं वास्तविक जिन्दगी समझने लगता है. उसे मृत्यु का बोध और परमपिता परमेश्वर का स्मरण तक नहीं रहता. यह ज्ञान तक नहीं रहता कि वह कौन है? किस कार्य के लिए उसे मनुष्य योनि में जन्म प्राप्त हुआ है और उसका जीवन में कर्त्तव्य क्या है, को भूलकर वह परिवार संबंधियों के पालन-पोषण और अपने भौतिक सुख-सुविधाओं की सामाग्रियां संग्रह हेतू अकर्म-कूकर्म सब कर अकूत धन-संपत्ति अर्जित करने में अपना दुलर्भ जन्म व्यतित कर देता है और वृद्धा अवस्था प्राप्त होने तक डूबा रहता है. वह मनुष्य की प्राकृतिक प्रवृत्ति है. किंचित मात्र जानता है कि एक दिन संसार से विदा होकर जाना है, मृत्यु निश्चित है. मुक्ति के लिए पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, धार्मिक अनुष्ठान आदि का आयोजन करता है, वह समझता है कि दिखावे से वह पाप कर्मो से मुक्त हो जाएगा, संभव ही नहीं है. ऐसा निरंकुश व्यक्ति तो संसार में संभवत कोई नहीं मिलेगा जिससे जीवन में कोई पाप कर्म नहीं हुआ हो? तो फिर उस अध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजनों से क्या लाभ, जिससे जन्म मरण के चक्रव्यूह से मुक्ति प्राप्त हो? जन्म-मरण से मुक्ति का मार्ग केवल सिद्ध साधू महात्माओं के शरण में ही प्राप्त हो सकता है, यही मार्ग परब्रम्ह परमेश्वर की प्राप्ति का भी है. किंतु ऐसा सिद्ध महात्मा का सानिध्य बहुत ही दुर्लभ होता है. विशेषकर कलियुग में तो कत्तई संभव नहीं है, क्योंकि यह चमत्कार को नमस्कार का युग है. शेष कुछ भी तो नहीं है. चंद चांदी के टुकड़ों के लिए मनुष्य-मनुष्य का अपहरण, लूट, खसोट व्याभिचार, अत्याचार और हत्याएं कुकृत्य करना शुरू कर देता है. किसके लिए और क्यों कर रहा है? परिणाम क्या होगा. यह सब भूल जाता है. यह वह सोचे कि दूसरे को मार रहा है, उसे भी एक दिन मरना है तो संभवतः वह यह हत्याएं नहीं करेगा. किंतू इन कुकृत्यों का फल मृत्युपरान्त उसे यमराज के दरबार में अवश्य मिलने वाला है, वहां परिवार का कोई सगा संबंधी यमराज के जल्लादों से बचाने नहीं आएगा.

अब पछताये क्या होत है,
जब चिड़िया चूंग गयी खेत।

अनेक अकर्म करने के बाद वृद्धावस्था में भजन-कीर्तन करने क्या होता है. संत कबीर दास ने अपने दोहों में सत्य ही कहा है-

चलती चाकी देख संत कबीरा रोये।

दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय।

वह भौतिक संसार की चाकी के दो पाट है, इन दोपाट के बीच में साबित बच कर भवसागर पार उतरना संभव नहीं है तो ब्रम्हाण्ड की अनन्तमार्ग की यात्रा सहज ही पूर्ण करना कैसे संभव है. **क्रमशः**

प्रस्तुत लेख एक लम्बी श्रृंखला लेख है. इसे क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा. संभवतः इस श्रृंखला को पूरा होने में लगभग ३० अंक लगें. अपने विचारों से अवगत करावें

ये आग कब बुझेगी (भागः04)हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

ऊपर उद्धृत संग्रह मुख्य रूप से भ्रष्टाचार, शिक्षा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखने वाले, विषयों से संबंधित आलेख/व्यंग्य/कहानियाँ/कविताएँ/ग़ज़ल/दोहे आदि आमंत्रित हैं. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचनाएँ 1500 शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा 250/-रुपये अथवा तीन रचनाएं 500/- रुपये सहयोग राशि के साथ 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी. डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं. अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

PSDIIT

(पवहारी शरण द्विवेदी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी)

एडमिशन एवं इन्फारमेशन सेंटर

BCA, PGDCA, NTT, BA, MCA, MSW, MA (Hindi, English, Pol Science, Sociology, History, MJMC) MBA, Diploma in Mechanical, Diploma in civil & architecture, Diploma in mines, Diploma in computer science, Diploma in taxtile, Trade Certificate in electrical, Trade certificate in Wire man, Trade certificate in droughts man

प्रवेश 1 मार्च 2013 से प्रारम्भ

सम्बद्धताः ईआईआईएलएम यूनिवर्सिटी, सिक्किम, एम.बी. यूनिवर्सिटी, हिमाचल प्रदेश

समाज के हर वर्ग की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं सस्थाओं के कोर्सेस संचालित करवाये जाते है.

सम्पर्कः लक्सो कम्पनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, चुंगी, इलाहाबाद-२११०११ मो०: 8726831971

आपकी डाक

संपादकीय सटीक है

विश्व स्नेह समाज का नवम्बर 2012 अंक यथा समय मिला. सुन्दर आवरण ज्योतिपर्व दीपावली की आभा बिखेर रहा है. अन्दर के स्थायी स्तम्भ व आलेख उपयोगी हैं. संपादकीय थोक व खुदरा बाजार की कीमतों में इतना अन्तर क्यों? सटीक है नागरिकता का बोध कराने का सद्प्रयास है साहित्य समाचार समीक्षा अंक को पूर्ण बनाते हैं. अन्तिम कवर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों के अवलोकन का अवसर देता है बधाई,

आपका हितैषी

शशांक मिश्र भारती

दुबौला-रामेश्वर पिथौरागढ़-२६ उत्तराखण्ड

नववर्ष मुबारक हो

नववर्ष मुबारक हो, नववर्ष मुबारक हो
सूरज की पहली किरण को,
चन्द्रमा के श्वेत प्रकाश को,
देवी और देवताओं को,
नभ और आकाश को,
नववर्ष मुबारक हो, नववर्ष मुबारक हो
जलीय जन्तुओं को,
थलीय जानवरों को,
नदी और नीर को,
कूपों और सरोवरों को,
नववर्ष मुबारक हो, नववर्ष मुबारक हो
ग़ज़ल और गान को,
इतिहास और विज्ञान को,
रामायण और कुरान को,
वीरों और नवजवान को,
नववर्ष मुबारक हो, नववर्ष मुबारक हो
गरीबों को, अमीरों को,
देश के किसानों को,
गर्व से कहता हूं,
खेतों को, खलिहानों को,
नववर्ष मुबारक हो, नववर्ष मुबारक हो

राम नारायण साहू 'राज',

सप्तमूर्ति मंदिर के पास, मुर्रा भट्टी, गांधी नगर, गुढ़ियारी, रायपुर, छ.ग.

स्व० पहवारी शरण द्विवेदी की प्रथम पूण्यतिथि पर

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष रहे स्व० पहवारी शरण द्विवेदी की प्रथम पूण्यतिथि पर संस्थान परिवार सादर नमन करता है

सिरमौर निराला

कवियों में सिरमौर निराला
था अदम्य साहस नस-२ में
दृढ़ित उमस अन्तस मन में।
शान्ति, संयम, क्षमा, दया,
और समभाव, सद्जीवन में।।
चमक रही थी मुख मंडल में,
तेज-पुंज की ज्वाला।
कवियों में सिर मौर निराला।।
स्वीकार सके न छंद विधान-प्राचीन,
मुक्तक और स्वछंदता इनके आधीन।
साहित्य, संस्कृति और धर्म में,
प्रज्ञा, प्रदा-प्रवीन।।
अन्तस्थल में दृढ़ ज्ञान ज्योति,
ऊपर से तन काला।
कवियों में सिरमौर निराला
परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता,
और नये पत्ते लिख कर।
महाप्राण की नव उपाधि पा,
ख्याति कमाई भू मंण्डल पर,
नित खोजते 'भानु' तुम्हें
लिये सोम रस प्याला
कवियों में सिरमौर निराला

जनवरी-फरवरी २०१३ में निराला जी को पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर देखकर मन गद गद हो गया. यह अंक बहुत ही अच्छा है. उत्कृष्ट सम्पादन हेतु बध ााई स्वीकारें.

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय'

चकपैगम्बरपुर, सिधांव, फतेहपुर, उ. प्र

++++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का दिसम्बर-१२ अंक, सम्पादकीय बिहार प्रान्त की साहित्यिक समृद्धि का परिचायक है. 'दिनकर और उनका रचना संसार, भारतीय संस्कार तथा गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में सूक्तियां, शीर्षक रचनाएं प्रिय लगीं. 'जीवन तो, धन्य देश भारत, कालजयी दिनकर तथा अपने देश को बचा ले नाम्नी काव्य रचनाएं प्रभाव छोड़ रही है.

डॉ० महेश चन्द्र शर्मा

अभिवादन, १२८,ए श्याम पार्क, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उ.प्र.

सिरदर्द

-डॉ. एन.एन.लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

■ सिर दर्द एक आम बीमारी है. आमतौर से 90 प्रतिशत व्यक्तियों में साल में एक बार सिर दर्द होता ही है. 40 प्रतिशत व्यक्तियों में वर्ष में एक बार बहुत जोर का सिर दर्द होता है.

■ सिर दर्द के बहुत से कारण है. गम्भीर रोगों के प्रति भी यह इशारा कर सकता है.

■ सिर दर्द का आम कारण टेंशन होता है जो आज के युग में आम बात है.

■ सिर दर्द के रोगीका रक्तचाप अवश्य नाप लेना चाहिए क्योंकि बढ़ा हुआ रक्तचाप इस लक्षण का एक आवश्यक कारण है.

■ बार-बार जुकाम वाले रोगी को जो सिर दर्द साइनासाइटिस की वजह से होता है. सूर्य के बढ़ते-बढ़ते बढ़ता जाता है और सूर्यास्त होते-होते घटने लगता है. आगे झुकने पर यह दर्द बढ़ जाता है.

■ मस्तिष्क की झिल्लियों में सूजन (मेनिंगजाइटिस) सिरदर्द का एक प्रमुख कारण है. रोगी तेज रोशनी से बचने का प्रयास करता है.

■ ब्रेन ट्यूमर सिर दर्द का खतरनाक कारण है. इसका निदान सी.टी. स्केन से होता है पर ये आवश्यक नहीं कि हर सिर दर्द के मरीज का सी.टी. स्केन करा लिया जाये.

■ एक तरफा सिर दर्द माइग्रेन का लक्षण है.

■ सिर पर चोट लगने के बाद सिर दर्द होना एक आम बात है.

■ किसी चीज की आदत को एकदम से छोड़ना सिर दर्द का कारण हो सकता है जैसे धूम्रपान या शराब.

■ तेज बुखार में सिर दर्द हो सकता है.

■ नींद का पूर्ण न होना सिर दर्द का आम कारण है.

■ आंखों का रोग जिसे ग्लूकोमा कहते हैं, में सिर दर्द होता है. साथ में उल्टी होना पाया जाता है. साथ में यह भी याद रखना आवश्यक है कि यदि चश्में की आवश्यकता है और उसका उपयोग न किया जाये तो सिर दर्द हो सकता है.

■ दांतो की तकलीफ में सिर दर्द हो सकता है.

■ सिर दर्द को साधारण रोग न समझकर चिकित्सक की राय लेना आवश्यक है. दर्द की दवाई से सिर दर्द घट जायेगा पर जब तक मूल कारण का पता न लग जाये वह बार-बार होता रहेगा.

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

✍ पत्रकारों के लिए निःशुल्क चिकित्सा, आवास, समाचार संकलन हेतु निःशुल्क ट्रेन/बस यात्रा पास, वृद्ध पत्रकारों को मासिक आर्थिक मदद दिलवाने हेतु संघर्ष करना और सहयोग के लिए सरकार को प्रेरित करना.

✍पत्रकारों का वार्षिक दुर्घटना व स्वास्थ्य बीमा करवाना.

✍देश भर के त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक समाचार पत्रों/ पत्रिकाओं के संपादकों/पत्रकारों को समय-समय पर निःशुल्क शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन करके सहयोग एवं मार्गदर्शन करना।

✍पत्रकारिता के उत्थान के समर्पित पत्रकारों/संपादकों को समय-समय पर सम्मानित करना। पत्रकारों, संपादकों के हितों के लिए संघर्ष करना, कानूनी लड़ाई लड़ना और आपदा/दुर्घटना के समय सहयोग करना।

विस्तृत जानकारी व सदस्यता ग्रहण करने के लिए सम्पर्क करें:

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.

☎(का0)0532-2401671, 09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com, Website: www.mediaforumofindia.com

विशेष: 01 मीडिया फोरम का उपरोक्त पता ही एक मात्र कार्यालय है.

02 सभी सदस्यों के नाम वेब साइट में दर्ज है. इसके अतिरिक्त न तो कोई सदस्य ओर न पदाधिकारी विधिमान्य होंगे और न ही इनका फोरम से कोई वास्ता होगा.

साहित्य समाचार

शंशाक मिश्र को विद्यासागर की उपाधि

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ के १७ वें अधिवेशन में मौनतीर्थ गंगाघाट उज्जैन पर मुख्य अतिथिश्री एस.एस. सिसौदिया रामचाकर, विशिष्ट अतिथि डा.हरीशप्रधान कुलाधिपति डा. सुमनभाई जी, कुलपति डा.तेजनारायण कुशवाहा व कुलसचिव डा. देवेन्द्रनाथ साह की उपस्थिति में शाहजहांपुर उ.०प्र. निवासी व रा.इ. का. दुबौला पिथौरागढ़ उत्तराखण्ड में शिक्षक पद पर कार्यरत श्री शशांक मिश्र भारती को उनकी कृति **पर्यावरण की कविताएं** के लिए विद्यासागर (डी.लिट.) की उपाधि से अलंकृत किया गया। इनके अलावा ६५ हिन्दी सेवियों को विद्यासागर, ८८ को विद्यावाचस्पति, १५ को भारतगौरव, ५ को अंग गौरव, ३ को महाकवि, १ को पत्रकार शिरोमणि, १को ज्योतिष शिरोमणि, १६ को भारतीय भाषा रत्न, ६ को साहित्य शिरोमणि और १४ को समाजसेवी रत्न से अलंकृत किया गया।

डॉ० चकोर सम्मानित

स्वतंत्रता सेनानी श्री ब्रजकिशोर प्रसाद के १३७वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर श्री ब्रजकिशोर स्मारक प्रतिष्ठान पटना में १५ जनवरी २०१३ को डॉ. नरेश पाण्डेय 'चकोर' को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'ब्रजकिशोर सम्मान-२०१३' से पूर्व राज्यपाल श्री डी.एन.सहाय द्वारा श्री प्रेम प्रकाश वर्मा, डॉ. बी.बी.मंडल एवं अन्य विद्वानों की उपस्थिति में प्रदान किया गया.

वली उल्लाह खां को साहित्य सिद्धहस्त सम्मान

अजमेर के वरिष्ठ साहित्यकार श्री वली उल्लाह खां फरोग को सोजत सिटी, राजस्थान में आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २०१२ के तहत शबनम साहित्य परिषद ने 'साहित्य सिद्धहस्त सम्मान-२०१२' से उनकी साहित्यिक सेवाएं एवं अभिनन्दनीय कार्य के लिए अलंकृत किया. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-२०१३

हिन्दी प्रचारक परिवार के संस्थापक, साहित्यानुरागी सुप्रसिद्ध लेखक श्री निहालचन्द बेरी तथा उनके यशस्वी पुत्र हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा श्री कृष्णचन्द्र बेरी की पावन स्मृति में स्थापित 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-२०१३ कानपुर के प्रख्यात हिन्दी सेवी, लेखक एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. बद्रीनारायण तिवारी को देना सुनिश्चित किया गया है. यह सम्मान राजस्थान की सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मंडल' के तत्वावधान में आयोजित प्रभु श्री श्रीनाथ जी के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर ५ मार्च २०१३ को प्रदान किया जाएगा। सम्मान स्वरुप अभिनन्दन एवं प्रशस्ति पत्र सहित ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट की जाएगी.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को संपादक शिरोमणि

विश्व स्नेह समाज के संस्थापक संपादक, सचिव-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान एवं मीडिया फोरम ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को राजस्थान की सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मंडल' के तत्वावधान में आयोजित प्रभु श्री श्रीनाथ जी के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर उनके सर्वोत्कृष्ट संपादन के लिए 6 मार्च 2013 को प्रदान किया जाएगा. यह जानकारी साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा जी ने पत्र के माध्यम से दी।

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचना

हमारा भारत महान??

भारत एक ऐसा देश है पिज्जा एम्बुलेंस के पहले घर पहुंचता है, जहां कार लोन 7% है और शिक्षा लोन 12%, जहां चावल 40/किलो में मिलता है और सिम कार्ड फ्री में, जहां लोग दुर्गा पूजा करते हैं और लड़की पैदा होने से पहले उसका खून करते हैं, जहां ओलम्पिक में शूटर को स्वर्ण पदक जितने पर 3 करोड़ देते हैं और दूसरे शूटर जो सीमा पर दुश्मनों से लड़ते-लड़ते शहीद होता है उसे 1 लाख. सच में हमारा भारत महान है.

मो० 08738001991

लघु कथाएं

कुत्तों के मालिक से सावधान

प्रायः हमने अनेक दरवाजों पर मनुष्य को सावधान करने के लिये, 'कुत्तों से सावधान' का तख़्ता लिखा देखा है, परन्तु यह पट्टी कुछ अजीब लगी. हमने सोचा संभवतः यहां कुत्ते तो कम से कम भोंकेगें नहीं, काटने की तो बात ही क्या?

यह क्या गृह प्रवेश पर कुत्तों की जोरदार गुर्रानें की आवज ने हमें यूं कंपकंप दिया, भयभीत किया मानों अकस्मात प्यार करते समय किसी अपने बूढ़े की आंखों में समा गये हों. उनका हमारे ऊपर हमला देखकर हम भाग ही जाते, तभी एक कड़कड़ाती आवाज ने, 'आने दो' कहा, सभी कुत्ते दुम दबाकर बैठ गये, मानो उनके ताकतवर समूह में दमदार कुत्ता गुर्राया हो.

'बोल, अच्छा बता विदेशों में कितने बैंक खाते हैं, कितना पैसा है, कितने डाके डाले हों, कितने कारखाने ताले लगवाये हो. कितने बैंक लूटे हो या कितने मनुष्यों का वध किये हो, कुछ किये भी हो या.....'

हम हैरान से रह टकटकी लगा उसे खामोशी से देखते रहे, और बोले-'हे मनुष्य देवता हम यह डिग्री नहीं पाये हैं, हां! तख्ते का मतलब अब समझ पाये है. वरना, हम पर जो गुर्राये थे उन्हें देखते ही भाग जाते.'

-**नरेन्द्र परिहार**, नागपुर, महाराष्ट्र

रोटी

कालोनी में घूम रही गाय की नजर चबूतरे पर पड़ी रोटियों पर गई. वह रोटी खा पाती उससे पहले एक कुत्ता भौंकता हुआ चला आया. उस कुत्ते की आवाज सुनकर कॉलोनी के दूसरे कुत्ते भी दौड़े चले आये. कुत्तों ने गाय को चारों तरफ से घेर लिया. कुत्तों से बचने के लिए गाय कभी आगे, कभी पीछे, कभी बांये, कभी दांये होने लगी. कुत्ते भौंकते हुए उसके करीब आ जाते. बड़ी मुश्किल से वह सींग दिखाकर पीदे धकेलती.

गाय समझ गई अगर वह कमजोर पड़ी तो कुत्ते उसे नोच खायेंगें. उसने मुकाबला करने का फैसला किया. जो कुत्ता सबसे पहले भौंका था, वह उसे सींग मारने को भागी. कुत्ता बचने के लिए भागा. कुत्ता आगे, गाय पीछे. जैसे तैसे कुत्ता अपनी जान बचाकर भाग छूटा. उस कुत्ते को भागता देखकर दूसरे कुत्ते दुम दबाकर खिसक गये. गाय वापस आकर आराम से रोटी खाने लगी.

इलाज

'**प**थरी है, आपरेशन कराना होगा.' डाक्टर शरणपाल ने परेश की अल्ट्रसाउण्ड की रिर्पोट देखकर कहा था.

परेश ने अपनी बीमारी का जिक्र मुकेश से किया. उसका दोस्त मुकेश बोला, 'मेरे साथ चलना. एक बाबा भभूत से पथरी सही कर देता है.'

एक दिन परेश, मुकेश के साथ बाबा के आश्रम पर गया. आश्रम के बाहर भीड़ और पुलिस जीप खड़ी देखकर मुकेश ने एक आदमी से पूछा था. वह आदमी बोला, 'बाबा भभूत में दर्द निवारक दवा पीसकर देता था. एक आदमी को डाक्टर ने आपरेशन बताया था. वह आदमी बाबा से दवा ले रहा था. वह आदमी मर गया. बाबा को पकड़ने पुलिस आयी है.'

उस आदमी की बात सुनकर परेश सोचने लगा. अच्छा हुआ बाबा का भांडा पहले ही फूट गया. वरना उसका भी हश्र यही होता.

-**किशन लाल शर्मा**, आगरा, उ.प्र.

क़ीमत

दोनों मित्र घर से सैर को निकले थे. चलते-चलते एक मित्र को सड़क पर चवन्नी पड़ी नज़र आई. वह उसे उठाने लगा तभी दूसरे मित्र ने पीछे मुड़कर देखा और पूछा.

'अरे, क्या उठा रहा है?'

'सड़क पर चवन्नी पड़ी है. उसे उठा रहा हूं.' पहले मित्र ने जवाब दिया.

'अरे मुर्ख, इस युग में चवन्नी की क्या क़ीमत रह गई है? आजकल कोई भिखारी भी इसे नहीं लेता है. फिर भी तू इसे उठा रहा है.' दूसरे मित्र ने उसका उपहास उड़ाते हुए कहा.

'कोई भिखारी चवन्नी की क़ीमत समझे या न समझे. लेकिन मैं तो इसकी क़ीमत समझता हूं. यह हमारी करेंसी हैं. मैं इस तरह का इसका अपमान होते देख नहीं सकता. वैसे भी यही चवन्नी, पांच रुपये, ग्यारह रुपये मे मिलकर उन्हें सवाया बनाती है जिनका हम प्रसाद खरीदकर भगवान के मन्दिर में चढ़ाते हैं?'

पहले मित्र का यह उत्तर सुनकर दूसरा मित्र निरुत्तर हो गया. -**रोहित यादव**, महेन्द्रगढ़, हरियाणा

प्रयास काव्य संग्रह

रचनाकारः ओम प्रकाश त्रिपाठी

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र-११

समीक्षा

श्रीमद्भग्वदगीता

प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' श्रीमद्भग्वदगीता का २४८ पृष्ठीय हिन्दी पद्यानुवाद जो १८ अध्यायों में विभक्त है. विकास प्रकाशन, मुंबई से प्रकाशित इस संस्करण का मूल्य २५०/ रुपये हैं. गीता की उपयोगिता हमेशा से रही हैं. लेकिन संस्कृत में समझ पाना सबके लिए आसान नहीं है. इसका पद्यानुवाद होने से आम पाठकों को पढ़ने व समझने में सहूलियत होगी. इस पुस्तक के बारे में प्रो. प्रेममोहन लखोटिया ने लिखा है 'श्रीमद्भगवतगीता का यह पद्यानुवाद संस्कृत न जानने वाले हिन्दी पाठकों के लिए मूल काव्यगत आनंद क साथ गीता को समझने का अद्भुत अवसर देता है. मूल संस्कृत के साथ हिन्दी भावार्थ भी ग्रंथ में दिये गये है, जिससे प्रत्येक श्लोक को आत्मसात करने का अवसर मिलता है.

महा मण्डलेश्वर नृसिंह पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी श्यामदास जी महाराज ने लिखा है ' प्रो. श्रीवास्तव का हिन्दी में पद्यानुवाद पढ़ा. भाषा सरल, मधुर, बोधगम्य और प्राणवान है. अनुवाद में गुणवत्ता, सार्थकता और सहजता है. जो संस्कृत भाषा नहीं समझते उन्हें हिन्दी में, गीता पढ़ने सा आनंद आयेगा.

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्वच्कैव परिदह्यते।/न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः

गिरा जा रहा हाथ से अनायास गांडीव त्वचा जल रही, भ्रमित मन, उठना कठिन अतीव।।३०।।

हाथ से गांडीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी बहुत जल रही है तथा मेरा मन भ्रमित-सा हो रहा है, इसलिए मैं खड़ा रहने को भी समर्थ नहीं हूं।।

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।/अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते

इन्हें मारना कब उचित, चाहे खुद मर जाऊं/धरती क्या, त्रयलोक का राज्य भले मैं पाऊं।।३५।।

हे मधुसूदन! मुझे मारने पर भी अथवा तीनों लोकों के राज्य के लिए भी मैं इन सबको मारना नहीं चाहता, फिर पृथ्वी के लिए तो कहना ही क्या है।।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।/ आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।।

जो भी है स्पर्श के सुखोपभोग, प्रिय तात/दुखदायी, इनसे विलग नित ज्ञानी निष्णात।।२२।।

जो ये इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सब भोग हैं, यद्यपि विषयी पुरुषों को सुखरूप भासते हैं, तो भी दुःख के ही हेतु हैं और आदि-अन्तवाले अर्थात अनित्य है. इसलिए हे अर्जुन! बुद्धिमान विवेकी पुरुष उनमें नहीं रमता।।

यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त खण्ड काव्य के माध्यम से गीता को समझने में आसानी होगी।

सिय रघुवीर विवाह

प्रस्तुत संग्रह मानस सत्संग सिय रघुवीर विवाह' जिसके लेखक अश्विनी कुमार अवस्थी जी है तथा सुयश प्रकाशन, कोलकाता ने इसे प्रकाशित किया है. ३१२ पृष्ठीय इस संग्रह का मूल्य मात्र १५०/रुपये है. प्रस्तुत संग्रह में श्री अवस्थी जी ने सीता मैया के अवतरण से लेकर विवाह तक के चित्रो को आध्यात्मिकता, भावात्मकता एवं आधुनिकता के रंगों में रंगकर ज्ञानवर्द्धक एवं मनमोहक बनाया हे, जिसे पाठक आसानी से हृदयंगम कर सकते हैं.

सीता राम विवाह के सिन्दूर दान के दृश्य को कैसे लिपिबद्ध किया है लेखक के भावों से ही देखते हैः-

राम सीय सिर सेंदुर देंही।
सोभा कहि न जाति बिधि केही।।

सिन्दूर दान की शोभा कैसी है-

अरुन पराग जलजु भरि नीके।
ससिहि भूष अहि लोभ अमी के।।

गोस्वामी यहां पर एक विलक्षण काव्य कल्पना करते हैं. प्रभु श्रीराम बाएं हाथ में सिन्दूर लेकर सीताजी के माथे पर लगाने जा रहे हैं. गोस्वामी जी कहते हैं मानों कमल पुष्प को लाल पराग से भली प्रकार भरकर अमृत के लोभ में सांप चन्द्रमा को भूषित करने जा रहा हो. श्रीराम की हथेली को कमल की, सिन्दूर को अरुण पराग की, श्रीराम की भुजा को सांप की और सीताजी के मुख को चन्द्रमा की उपमा दी गई है. तात्पर्य यह कि मानो सर्प अमृत के लोभ से कमल पराग लेकर चन्द्रमा को भूषित कर रहा हो.

श्रीराम की बाम हथेली में लाल सिन्दूर भरा है. भरि नीके- अच्छी प्रकार से भरना. मांग में सिन्दूर भरपूर भरा जाता है. दो ऊंगली या तीन ऊंगली से नहीं अपितु पांचों ऊंगलियों से भरा जाता है. प्रभु श्रीराम के बाम करतल में सिन्दूर है और दाहिने हाथ की पांचों ऊंगलियों से उसे मांग में भरा जाना है. इन पांचों उंगलियों ने मिलकर सांप के फन का आकार ग्रहण कर लिया है. लेखक का सम्पूर्ण लेखन बड़ा श्रमसाध्य एवं चिन्तनशील लगता है. लेखक ने सारे प्रसंगों को अपनी कल्पना में देखा है तथा अनुभव किया है फिर उनकी चित्रात्मक अभिव्यक्ति की है. निश्चित ही पाठक इस पुस्तक का भरपूर आनन्द उठायेंगे.